सत्यमेव जयते

प्रारंभिक शिक्षा विभाग – राजस्थान सरकार

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य

कक्षा : 1 से 5 तक

हिन्दी

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

अनुक्रमणिका

1.	भाषा शिक्षण के उद्देश्य	
2.	पाठ्यक्रम (एसआईईआरटी)	कक्षा 1 व 2
3.	टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण	कक्षा 1
4.	पाठवार एवं टर्म वार अधिगम कार्य एवं उद्देश्य	कक्षा – 1
5.	टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण	कक्षा 2
6.	पाठवार एवं टर्म वार अधिगम कार्य एवं उद्देश्य	कक्षा – 2
7.	पाठ्यक्रम (एसआईईआरटी)	कक्षा 3 से 5
8.	टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण	कक्षा 3
9.	पाठवार एवं टर्म वार अधिगम कार्य एवं उद्देश्य	कक्षा –3
10.	टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण	कक्षा 4
11.	पाठवार एवं टर्म वार अधिगम कार्य एवं उद्देश्य	कक्षा –4
12.	टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण	कक्षा 5
13.	पाठवार एवं टर्म वार अधिगम कार्य एवं उद्देश्य	कक्षा – 5

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना' के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्

एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

बोध शिक्षा समिति

यूनिसेफ, जयपुर

भाषा शिक्षण के उद्देश्य (एनसीएफ 2005 के अनुसार)

- **जो कुछ वह सुनते हैं उसे समझने की दक्षता** : उसमें गैर शाब्दिक संकेतों के साथ–साथ भाषा के विभिन्न माध्यमों से सुनकर, पढ़कर, देखकर, और समझकर संबंध जोड़ने और अनुमान लगाने की कुशलता होनी चाहिए।

- **समझ के साथ पठन की योग्यता होनी चाहिए न कि मात्र डिकोडीकरण की** – उसे विभिन्न व्याकरण सम्मत, अर्थगत और लिपि संकेतों के प्रयोग द्वारा आरेखित तरीके से संबंधित विषयवस्तु से पठन की आदत विकसित करनी चाहिए। संबंधित विषयवस्तु को अपने पिछले ज्ञान के साथ जोड़कर निष्कर्षों द्वारा अर्थ निर्माण एवं पठन के लिए आत्मविश्वास विकसित करना तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण के साथ पढ़ते समय प्रश्न भी सामने रखने चाहिए। वास्तव में पढ़ना पाठ के साथ संवाद करना है, अपने अनुभवों व सैद्धांतिक संरचना के साँचे में पाठ को ढालना है। भाषा की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित साहित्य को पढकर उसके भाव को समझना।

- **सहज अभिव्यक्ति :** उसे विभिन्न परिस्थितियों में अपने संप्रेषणात्मक कौशलों को प्रयोग में लाने में समर्थ होना चाहिए। वह तार्किक, विश्लेषणात्मक तथा रचनात्मक ढंग से परिचर्चा में शामिल हो सके। वह विभिन्न विधाओं को पढ़कर, भाव को समझकर उसकी सहज अभिव्यक्ति कर सके। विभिन्न विधाओं की आपस में तुलना करते हुए रोचक तरीके से अभिव्यक्त कर सके।

- **सुसंगत लेखन** : लेखन एक यांत्रिक कौशल नहीं है। इसमें विभिन्न संबद्ध युक्तियाँ अर्थात् तत्संबंधी विषयों के द्वारा उस विषय को संयोजित करने, पर्यायवाची इत्यादि के प्रयोग द्वारा विचारों को सुसंगत ढंग से संयोजित करने की योग्यता के साथ–साथ व्याकरण, शब्द–ज्ञान, विषय, विराम–चिह्नों आदि पर पर्याप्त नियंत्रण इत्यादि कौशल सम्मिलित हैं। बच्चों में अपने विचार सहज, व्यवस्थित ढंग से प्रकट करने एवं अपने लिए विषय का चयन करने का आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए। बच्चे अनुमान और कल्पना आधारित समझते हुए अपने विचारों को लिख सके, सुनी, पढ़ी बात/घटना को क्रमबद्ध एवं मूलभाव के साथ लिख सके। लिखित सामग्री को पढ़कर उसको अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना एवं उचित शीर्षक दे पाना एवं किसी विषयवस्तु के भाव को समझकर अपने शब्दों में लिख पाना।

- **विभिन्न रजिस्टरों पर नियंत्रण**– (मानसिक स्तर पर विभिन्न शब्दावलियों को दर्ज़ करना और आवश्यकता पड़ने पर उनका सही उपयोग कर पाना।) भाषा का प्रयोग कभी भी एक तरह से नहीं होता है। इसके असंख्य प्रकार, अर्थ भेद व रंग होते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार होते हैं। एक विद्यार्थी शब्द/वाक्य भंडार का एक अंश होना चाहिए। विद्यालय के विषयों के अतिरिक्त विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोजनों जैसे–संगीत, खेलकूद, फिल्म, बागवानी, निर्माण कार्य, पाककला आदि में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं को समझने और उनके प्रयोग में भी दक्ष होना चाहिए।

- **भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन** : कराए जाने वाले कार्य इस प्रकार से होने चाहिए कि उससे बच्चा वैज्ञानिक प्रक्रिया के तमाम अवयवों जैसे– आँकड़ों का संकलन, आँकड़ों का अवलोकन और उनकी समानताओं और विभिन्नताओं के आधार पर उनका वर्गीकरण एवं परिकल्पना करने, आदि के अनुसार अग्रसर हो। इस प्रकार से बच्चे की संज्ञानात्मक योग्यताओं को विकसित करने में भाषा विज्ञान के ये उपकरण महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इससे व्याकरण के मानक नियमों को बेहतर ढंग से सीखा जा सकेगा।

- **सृजनात्मकता** : भाषा की कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। जैसे कल्पना के आधार पर कुछ तुकबंदियां लिखवाना, किसी विषयवस्तु के बारे में नवीन शब्दों का प्रयोग करते हुए लेख लिखवाना, कविता, कहानी, नाटक या अन्य विधाओं को पढ़कर चित्र बना पाना व अपनी पसंद की चीज़ों के डिजाइन बनाना। आत्मकथात्मक शैली में किसी विषय पर अपने विचार दे पाना। मौलिक रूप से रचनात्मक लेखन कर पाना, विभिन्न व्यक्तियों/पात्रों का अभिनय कर पाना, रेखाचित्र बना पाना। दिए गए शब्दों व चित्रों की सहायता से कहानी व अन्य विधाओं का सृजन कर पाना, एक विधा से दूसरी विधा में परिवर्तन कर पाना, किसी प्राकृतिक दृश्य, घटना, यात्रा आदि का अपने शब्दों में वर्णन कर पाना, जिससे बच्चों में चितंन क्षमता का विकास हो सके और उसका अपने दैनिक, व्यावहारिक जीवन में उपयोग कर सके।

- **संवेदनशीलता** : भाषा की कक्षा द्वारा विद्यार्थियों को हमारी समृद्ध संस्कृति विकसित करने एवं समकालीन जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत करवाने के बेहतर अवसर उपलब्ध होते हैं।

- **समालोचनात्मक चिंतन** : सुनकर एवं पढ़कर तार्किक ढंग से उचित–अनुचित का निर्णय कर प्रतिक्रिया दे पाना। भाषा–शैली, भाषा–सौन्दर्य एवं अंलकृत साहित्य की सराहना कर पाना। चितंन कर भाषा की समस्याओं से उभर पाना। नाटक, संवाद, परिचर्चा के माध्यम से सशक्त समालोचनात्मक अभिव्यक्ति कर पाना, भाषा तत्वों का अनुप्रयोग करते हुए किसी चीज की व्याख्या एवं विश्लेषण कर पाना।

- **परिवेशीय सजगता** : हिन्दी की लोकनिधि एवं बोलियों के प्रति आदर और उत्साह के भाव के साथ जानने व समझने की पहल। मानवता, प्रेम, दया एवं करूणा जैसे भाव रखना। भाषा में शिष्टता एवं व्यवहार में नम्रता के साथ बातचीत कर पाना।

पाठ्यक्रम कक्षा : 1 व 2

(राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा निर्धारित)

बोलना–सुनना

- भाषा की विविध विधाओं, जैसे– गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, संवाद, चित्र व दृश्य पर चर्चा आदि को सुनकर आनंद प्राप्त करना।
- ध्यान से एवं धैर्यपूर्वक सुनकर समझना।
- परिवेश एवं संदर्भ से संबंधित सामग्री को समझना।
- सुनने के शिष्टाचार का पालन करना।
- गति एवं हाव–भाव के अनुसार बोलना।
- परिचित एवं नवीन परिस्थितियों में सहजता से अपने विचार प्रस्तुत करना।
- अपने विचार, अनुभवों एवं कल्पना को अपने शब्दों में प्रस्तुत करना।
- प्रश्न बनाना व पूछना।
- घर, परिवेश एवं विद्यालय की भाषा में तालमेल बैठाकर अपने अनुभव व्यक्त करना।
- सुनी हुई बात को अपने शब्दों में कहना।
- पढ़ी गई सामग्री को अपने शब्दों में कहना।
- गीत, कविता, कहानी व अपने विचारों को अकेले तथा समूह में प्रस्तुत करना।
- सुने हुए गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप आदि में अपने अनुभवों को जोड़कर अपनी बात कहना।
- अपने घर, परिवार, विद्यालय एवं परिवेश में होने वाली समूह चर्चा में भाग लेना और अपने विचार प्रस्तुत करना।
- अपने अनुभव एवं कल्पनालोक की बातों को सहज ढंग से कहना।
- सुनी, पढ़ी सामग्री में क्या, कौन, कब, कैसे, कहाँ जैसे प्रश्न पूछ पाना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।
- कविता, कहानी को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाते हुए बोलना।
- ध्वन्यात्मक शब्दों के साथ खेलने व गढ़ने के अवसर का लाभ उठाना, जैसे– अक्कड़–बक्कड़, हल्लम–चल्लम।

पढ़ना

- पढ़ने की ललक होना।
- अनुमान लगाकर पढ़ना एवं अर्थ खोजना।
- बच्चे द्वारा शब्दों और वाक्यों को वर्ण जोड़कर पढ़ने की बजाय इकाई के रूप में समझकर पढ़ना।
- अपने परिवेश में उपलब्ध सामग्री को अनुमान लगाकर समझते हुए पढ़ना। जैसे– दीवार श्यामपट्ट, साइनबोर्ड आदि।
- परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों व छपी हुई सामग्री को पढ़कर समझना।
- शब्दों में आपसी सह संबंध स्थापित करते हुए प्रसंग के अनुसार पढ़ना।

लिखना

- शब्द और वाक्य स्पष्ट रूप से लिखना।
- परिवेश व संदर्भों के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना।
- किसी कविता या कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखना।
- सुनी हुई विषयवस्तु व अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना।
- प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना।
- सुनी हुई विषयवस्तु को यथा रूप में लिखना।
- तार्किक चिन्तन के आधार पर सरल रचनाएँ करना एवं अपनी बात लिखना।
- कल्पनाशीलता के आधार पर गीत, कविता, कहानी, चुटकुले आदि की रचना कर सकें

व्यावहारिक व्याकरण

- व्याकरण की अवधारणाओं की अमूर्त परिभाषाएँ याद करने से अधिक महत्त्वपूर्ण है उन्हें वास्तविक संदर्भों में समझना।
- चंद्र बिन्दु, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, 'र' के रूप, विराम चिह्न, पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्न वाचक चिह्न, लिंग, वचन को पहचानना तथा प्रयोग में लाना।

कक्षा–1 : टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण

आरंभिक गतिविधियों के संदर्भ में :

कक्षा–1 में प्रवेश लेने वाले बच्चों के लिए विद्यालय का माहौल नया होता है। इस माहौल में उन्हें सहज बनाने की आवश्यकता होती है। इसके लिए 'रुनझुन–1' में दी गई आरंभिक गतिविधियों को 'प्रथम टर्म' के प्रारम्भ में किया जाना आवश्यक है। इन गतिविधियों को बीच–बीच में अन्य टर्म में आने वाले पाठों के साथ भी करवाया जाता रहना अपेक्षित है।

संदर्भ सामग्री :

संबंधित पाठ्य पुस्तक व स्तर के अनुरूप अन्य सहायक कार्यपत्रकों, गतिविधियों, पुस्तकालय से बाल कविता व कहानियों की पुस्तकों का चयन शिक्षक स्वयं के स्तर पर करते हुए भी उपयोग कर सकते हैं।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–1 : प्रथम टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• सुनी हुयी सरल छोटी कविता / बालगीत / कहानी को स्पष्ट शब्दों में दोहरा सकें। • कविता / बालगीत को लय, गति और हावभाव का तालमेल करते हुए सुना सकें।
2.	**पढ़ना और समझना**	• चित्रों की सहायता से चित्र के नाम की आकृति (शब्द) का पठन कर सकें। • चित्र की मदद से परिचित शब्द को पढ़कर मिलान कर सकें और परिचित शब्द को स्वतंत्र रूप से (बिना चित्र की सहायता से) पहचान कर सकें एवं पढ़ सकें। • **ए, आ, ई,** की मात्रा वाले शब्दों को चित्र व बिना चित्र की सहायता से पढ़ सकें।
3.	**लिखना**	• दिए गए अक्षर / शब्दों पर पेंसिल फेर सकें। • अक्षर / सरल शब्दों को देखकर लिख सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• चित्रों में रंग संयोजन कर सकें। • अपने मन से परिचित वस्तु का स्पष्ट चित्र बना सकें। • किसी कहानी में आए विभिन्न पात्रों का देखकर अभिनय कर सकें। • कहानी में आए किसी एक पात्र का बिना झिझक के अभिनय कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–1 : द्वितीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• संबंधित स्तर के अनुरूप सुझाई गई कहानी / कविता को पहल करके स्वयं सुनाने की तत्परता रख सकें। • दिए गए निर्देशों (सरल) को समझ कर अनुपालना कर सकें । • संबंधित कविता / कहानी / विवरण सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दे सकें।

2.	**पढ़ना और समझना**	• बिना चित्र की सहायता से मात्रायुक्त शब्दों को पढ़ सकें। **(ए, आ, ई, इ, ओ** की मात्रा) • पढ़ते समय शब्दों को बिना रुके हुए प्रवाह के साथ बोल सकें (रेल, रात, नाना, हाथी, आदि)। • परिचित शब्दों की इकाई ध्वनियों की पहचान के साथ वर्ण को पढ़ सकें।
3.	**लिखना**	• दो/तीन/चार अक्षरयुक्त सरल अपरिचित नए शब्दों का लेखन कर सकें एवं सरल वाक्यों को देखकर लिख सकें। • श्रुतलेख कर सकें एवं सीखी गई मात्रायुक्त शब्दों को बिना देखे लिख सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• स्तरानुरूप दी गई कविता/कहानी को सुनकर उसके अनुसार एक या एक से अधिक पात्रों का चित्र बना सकें। • कहानी/परिचित घटना स्थिति का अभिनय कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–1 : तृतीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• चित्र, अनुभव, कहानी आदि का वर्णन करते समय बिना झिझक के सुसंगत शब्दों का इस्तेमाल इस्तेमाल करते हुए अभिव्यक्त कर सकें। • चल रही बातचीत में अपना मत रख सकें एवं सुनी हुई बात को अपने शब्दों में बता सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• सीखे गए वर्णों की सहायता से सरल लेकिन अपरिचित शब्दों को पढ़ सकें। बिना चित्र की सहायता से मात्रायुक्त शब्दों का पठन कर सकें। **(ए, आ, ई, इ, ऊ, औ, ओ, उ, ए, ऐ, ं, ँ)**
3.	**लिखना**	• सरल शब्दों का श्रुतलेख कर सकें सीखी गयी मात्रायुक्त शब्दों को बिना देखे लिख सकें। • सीखे गए वर्णों से नए दो/तीन/चार अक्षरयुक्त सरल अपरिचित नए शब्दों का लेखन एवं सरल वाक्यों को देखकर लिख सकें। • चित्र देखकर दो या तीन शब्दों के माध्यम से एक वाक्य लिख सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• मिट्टी या अन्य वस्तुओं के प्रयोग से चीज़ें बना सकें। • सरल चित्रों को पेंसिल फेरकर पूरा कर सकें एवं अनुकरण से सरल चित्र बना सकें। • अपने मनपसंद या किसी पात्र का अभिनय कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–1 : चतुर्थ टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनना– सुनाना और बोलना**	• सही वाक्य संरचना के सुनी हुई बात पर अपनी राय व्यक्त कर सकें। • सुनकर सरल प्रश्नों का उत्तर देने की तत्परता/पहल कर सकें। (जैसे– आपको क्या अच्छा लगता है, आपके मम्मी–पापा क्या काम करते हैं, सुबह से शाम तक क्या–क्या काम करते हो? आदि)

		• पूछे गए प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दे सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• विभिन्न सरल लघु–दीर्घ मात्रायुक्त शब्दों को पढ़कर समझ सकें। (मात्रा ध्वनि के अंतर के साथ) • सीखी गई मात्राओं से बने सरल वाक्यों को धीमी गति के साथ पढ़ सकें। • शब्दों और छोटे–छोटे वाक्यों को प्रवाह के साथ पढ़ सकें। • छोटी कविताओं/कहानी को पढ़ने का प्रयास कर सकें ।
3.	**लिखना**	• लघु व दीर्घ मात्राओं की ध्वनि के अन्तर को सुनकर शब्दों को लिख सकें। (**इ ,ई** तथा **उ ,ऊ** की) • सरल वाक्यों को स्वयं लिख सकें। • तुक वाले (अन्त में एक जैसी ध्वनि वाले) शब्दों का लेखन कर सकें। • सीखे गए शब्दों को वर्णमाला के क्रम से लिख सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• मिट्टी या अन्य वस्तुओं के प्रयोग से चीज़ें बना सकें। (पूर्व से ज्यादा सफाई से) • अनुकरण से सरल चित्र बना सकें। (आसानी से पूर्व की अपेक्षा समय कम लगाकर) • कहानी आदि के पात्रों का अभिनय कर सकें।

कक्षा–1 : प्रथम टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–1 : चक चक चैया (कविता)

- कविता को सुनकर हावभाव के साथ दोहराना।
- परिवेशीय यातायात के साधनों से संबंधित जानकारी एवं अनुभव को बताना।
- शब्द की पहचान करना एवं सीखे गए शब्दों में आए अक्षर ध्वनि को सुन कर समझते हुए उच्चारित करना।
- परिचित शब्द व वर्णाकृतियों को लिखना।

पाठ–2 : रेल का खेल (कविता)

- कविता से अपने अनुभव व कल्पना को जोड़ना।
- संबंधित शब्द को पहचानना एवं पढ़ना।
- सीखे गए शब्द से सम्बन्धित **वर्णों/अक्षरों** को पहचानना।
- ध्वनि के माध्यम से अक्षर की पहचान करना एवं स्वर की ध्वनि एवं संकेत को पहचानना।
- परिचित अक्षर व शब्द लिखना।
- चित्र के अनुसार उचित रंग संयोजन करना।
- कहानी के संदर्भ में अपने विचार बताना एवं कहानी से स्वयं के अनुभव को जोड़ना।
- पूर्व ज्ञान के आधार पर परिवेशीय खान–पान (भोजन) के बारे में स्वयं की रुचि को बताना।
- वर्ण ध्वनि की पहचान करते हुए अन्य शब्दों के साथ सहसम्बन्ध जोड़ना एवं लिखना।
- मात्रा की पहचान कर सीखे गए वर्णों के साथ प्रयोग करना।

पाठ–4 : कल देखेंगे (कविता)

- कविता को सुनकर बोलना एवं अनुकरण से पढ़ना।
- अनुमान लगाकर पढ़ना एवं चर्चा में भाग लेते हुए स्वयं की बात कहना।
- कविता के संदर्भ एवं घटना क्रम के आधार पर स्वयं चिन्तन कर अपने विचार अभिव्यक्त करना।
- निर्देशानुसार अभिनय करते हुए संवाद बोलना।
- कविता में आए नवीन शब्दों को चित्र की मदद से पहचान कर पढ़ना।
- अक्षरों को ध्वनि के साथ सहसम्बन्ध बनाते हुए

- कल्पना के अनुसार चित्राकृति बनाना।

चित्र दृश्य : जंगल की सैर

- चित्र दृश्य का बारीकी से अवलोकन करते हुए अपने अनुभवों से जोड़कर अभिव्यक्ति करना।

पाठ–3 : तीन साथी (कहानी)

- चित्र पठन करते हुए कहानी को समझना।
- अनुकरण से कहानी पठन के दौरान शब्दों की पहचान करना।

पहचानना।

- ई स्वर की मात्रा एवं ध्वनि पहचानना एवं मात्रा का प्रयोग करते हुए लेखन करना।
- सीखे गए वर्णों एवं मात्राओं का उपयोग कर शब्द पढ़ना।
- चित्र के अनुसार उचित रंग संयोजन करना।

कक्षा–1 : द्वितीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–5 : दाल,बाटी,चूरमा (कविता)

- सुनकर कविता को हावभाव के साथ अभिव्यक्त करना।
- परिवेशीय खान–पान की जानकारी, चर्चा में अपनी पसन्द–नापसन्द को अभिव्यक्त करना एवं अलग–अलग संस्कृति के खान–पान में अन्तर करना।
- 'आ' मात्रा ध्वनि एवं संकेत को समझना एवं आ, ई व ए की मात्रा का शब्दों के साथ उपयोग करना।
- पूर्व में सीखे गए वर्णाक्षरों की पहचान करना।
- नवीन शब्दों की रचना करना।
- वाक्य रचना को समझते हुए वाक्य बनाना।
- अपनी पसंद के चित्र बनाकर उचित रंग संयोजन करना।

चित्र दृश्य पठन : बाज़ार चलें

- चित्र दृश्य का बारीकी से अवलोकन करते हुए अपने अनुभवों से जोड़कर अभिव्यक्त करना।

पाठ–6 : टिपिक–पाँ–फुर्र

- अनुकरण द्वारा स्पष्ट शब्दों में कविता को दोहराना एवं स्वयं पढ़ने का प्रयास करना।
- आस–पास में खेले जाने वाले खेलों की जानकारी लेना और स्वयं के खेलों के बारे में बात करना।
- विभिन्न आवाज़ों को सुनकर अन्तर करना।
- इ (ि) ध्वनि की पहचान एवं ख वर्ण ध्वनि को पहचान कर उससे संबंधित शब्दों को पढ़ना।
- कविता में आए नवीन शब्दों को पहचानना।
- सीखी गए मात्रा एवं वर्णों का उपयोग कर पढ़ना एवं स्वयं शब्द
- वाक्य सृजन करना।
- चित्र के अनुसार रंग संयोजन करना।

पाठ–8 : घेरा

- संबंधित संदर्भ को समझते हुए अपने परिवेश के अनुभवों को समूह में पहल के साथ अभिव्यक्त करना।
- अनुकरण द्वारा पढ़ना एवं स्वयं भी पढ़ने का प्रयास करना।
- वर्णाकृति एवं ध्वनि के मध्य सहसंबंध स्थापित करते हुए पहचान करना।
- सीखे गए वर्णों का अनुप्रयोग कर पढ़ना।
- नवीन शब्द रचना करना।
- स्वयं चित्र बनाना एवं उचित रंग संयोजन करना।
- परिवेशीय फेरीवालों से सम्बन्धित अनुभव को कक्षा में चल रही चर्चा के दौरान बताना।

पाठ–9 : एक थी चिड़िया (कहानी)

- कहानी को सुनकर आनन्द लेना और स्वयं पढ़ने का प्रयास करना।
- समूह में अपने अनुभवों को जोड़कर अपने विचार रखना।
- पशु–पक्षियों के बारे में पूर्व जानकारी का प्रयोग करना।
- नए वर्णों की ध्वनि के साथ पहचान करना

लिखना।

पाठ– 7 : ऊँट

- कविता को सुनकर हावभाव व लय के साथ बोलना।
- पूर्व अनुभव के आधार पर अपनी जानकारी को अभिव्यक्त करना।
- नवीन वर्णों को ध्वनि व लिपि के अनुसार पहचानना एवं पढ़ना।
- नए शब्दों का पठन एवं लेखन करना।

एवं आकृति के साथ मिलाना।

- शब्दों में से विभिन्न वर्ण ध्वनियों को पहचानना।
- सुनी, पढ़ी कविता से संबंधित चित्रांकन करना।
- सीखे गए वर्णों, मात्राओं का प्रयोग कर नवीन शब्द एवं वाक्य सृजन करना।

कक्षा–1 : तृतीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

हमारे त्योहार

- चित्र दृश्य का बारीकी से अवलोकन करते हुए अपने अनुभवों से जोड़कर अभिव्यक्त करना।

पाठ–10 एक–दो–तीन (कविता)

- कविता के माध्यम से संख्या ज्ञान की समझ बनाना। (इन्टीग्रेशन)
- विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण को समझना। (भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन)
- नए वर्णों को पहचानकर पढ़ना।
- नवीन शब्दों का सृजन करना।
- दस तक के अंकों की पहचान एवं लेखन करना।

पाठ –11 दोस्ती (कहानी)

- अनुमान लगाकर कहानी को पढ़ना।
- नवीन शब्दों को ग्रहण करना एवं अपनी भाषा में उनका इस्तेमाल करना।
- अपने विचार, अनुभव एवं कल्पना को अपने शब्दो में प्रस्तुत करना एवं दूसरे की बात को धैर्यपूर्वक सुनना।
- कहानी के सन्दर्भ से जुड़ी कविता को हाव–भाव के साथ सामूहिक रूप से गाना।
- व्यक्तिगत रूप से कविता सुनाना।
- लेखन में नवीन वर्ण, मात्राओं का प्रयोग करना।
- चित्र के अनुसार रंग–संयोजन करना।

पाठ –12 उछली गेंद (कविता)

- स्पष्ट शब्दों में कविता को बोलना एवं कविता को गाने की पहल करना।
- परिवेश एवं संदर्भ से सम्बन्धित चर्चा में भाग लेना।
- कौन, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर देना।
- नए स्वर एवं वर्ण को पहचानना।
- स्पष्टता के साथ शब्द पढना़ व लिखना।
- अपने अनुभवों को जोड़ते हुए मन पसन्द चित्र बनाना और रंग भरना।

पाठ – 13 शाकालाका बुम–बुम (कहानी)

- अपने अनुभव व कल्पना को अपने शब्दों में प्रस्तुत करना।
- अवलोकन एवं अनुभव के आधार पर वस्तुओं के चित्र बनाना।
- पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना एवं प्रश्न करना।
- ई व त की पुख्ता समझ बनाना।
- सही वर्ण एवं मात्रा का उपयोग करके सार्थक शब्दों का सृजन एवं लेखन करना।
- वाक्य रचना करना।
- मन पसंद का चित्र बनाकर रंग भरना।

कक्षा–1 : चतुर्थ टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ –14 बाजरा (कविता)

- कविता को पढ़ने का प्रयास करना एवं सुनकर अनुकरण द्वारा शब्दों का सही उच्चारण करना।
- अपने अनुभव, जानकारी, विचारों को समूह में प्रस्तुत करना एवं दूसरे के विचारों को धैर्य पूर्वक सुनना।
- घर, परिवेश एवं विद्यालय की भाषा में तालमेल बिठाकर अपने अनुभव व्यक्त करना।
- शब्दों में आए वर्णों को पहचानना, ध्वनि के आधार पर अलग करना एवं लिखना।
- निर्देशानुसार चित्र बनाकर अभिव्यक्त करना।
- स्वयं के द्वारा बनाए गए चित्र के बारे में समूह में बताना।

पाठ– 15 पूँछ की सवारी (कहानी)

- कहानी को सुनकर आनन्द लेना और स्वयं कहानी को पढ़ने का प्रयास करना।
- विषय वस्तु के आधार पर स्वयं के अनुभवों को जोड़ते हुए अपने विचार अभिव्यक्त करना।
- परिवेश में पाए जाने वाले जीव–जन्तुओं के अवलोकन के अनुभवों को जोड़ना।
- क्या, क्यों वाले प्रश्न के उत्तर पढ़ी एवं सुनी सामग्री से देना ।
- नवीन वर्णों की पहचान करना।
- अनुमान लगाकर पढ़ना एवं अर्थ खोजना।
- वाक्य रचना एवं कहानी रचना को समझना।
- अपनी पंसद का रंग संयोजन करना।

चित्र कहानी : कौए की चतुराई

- कहानी के क्रम को समझना, अनुभव कल्पना एवं विचार को अपने शब्दो में व्यक्त करना।
- व्यक्तिगत स्तर पर इसी प्रकार की कहानी (परिवेश की) सुनाना।

पाठ– 16 हलीम चला चाँद पर (कहानी)

- कहानी को चित्र के माध्यम से अनुमान लगाकर पढ़ना।
- अपने अनुभव एवं काल्पनिक विचारों को लिपिबद्ध करना।
- उच्चारण की स्पष्टता से ध्वनि एवं आकृति स्पष्ट करना।
- सभी मात्राओं का उपयोग करते हुए शुद्ध रूप से लेखन करना।
- स्वयं के बारे में वाक्य बनाकर लिखना।
- चित्र के अनुसार रंग भरना।

पाठ – 17 इन्दर राजा पाणी दो (लोक गीत)

- व्यक्तिगत रूप से कविता को गाकर सुनाना।
- स्थानीय भाषा के अर्थ को समझना।
- शब्दों में से 'ण' की पहचान कर उसका उच्चारण करना।
- लिखकर अपनी जानकारी अभिव्यक्त करना।
- वर्णमाला को क्रम से पहचानना एवं पढ़ना।
- नवीन शब्दों की रचना करना।
- संयुक्त वाक्य के बारे में समझ बनाना।
- सभी मात्राओं का उपयोग करते हुए उनके मध्य अन्तर करना।
- अपने विचारों को सम्मिलित करते हुए वाक्य सृजन करना।

कक्षा–2 : टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण

पुनरावृत्ति गतिविधियाँ :

सत्रारंभ के समय बच्चों के साथ प्रथम टर्म के दौरान पुनरावृत्ति का कार्य करवाया जाना भी अपेक्षित है। यह कार्य पाठ्य पुस्तक में दिया गया है। पूर्व की कक्षाओं में क्या सीखा उसे दोहरा लेने से आगे के कार्य की स्थितियों में सुगमता रहती है।

संदर्भ सामग्री :

संबंधित पाठ्य पुस्तक व स्तर के अनुरूप अन्य सहायक कार्यपत्रकों, गतिविधियों, पुस्तकालय से बाल कविता व कहानियों की पुस्तकों का चयन शिक्षक स्वयं के स्तर पर करते हुए भी उपयोग कर सकते हैं।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–2 : प्रथम टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• सुनी हुई कविता, कहानी को हाव–भाव के साथ अपने शब्दों में सुना सकें। • सुनकर प्रश्नों के उत्तर देने की पहल कर सकें। • समूह चर्चाओं में पहल कर सकें और अपनी भाषा में अपनी बात व्यक्त कर सकें।
2.	**पढ़ना और समझना**	• विभिन्न प्रकार की मुद्रित सामग्री को आनन्द के साथ पढ़ सकें। • सीखे गए वर्णों व मात्राओं की सहायता से बने छोटे–छोटे शब्दों और वाक्यों को बिना रुके प्रवाह के साथ पढ़ सकें और समझ सकें।
3.	**लिखना**	• सीखी गई मात्राओं का प्रयोग करते हुए शब्द एवं सरल वाक्य लिख सकें। • ध्वनियों के अन्तर को ठीक से समझ सकें और निर्देशानुसार उपयोग कर सकें। • विषयवस्तु के अनुसार तीन–चार वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• अपने मन से स्तरानुसार कविता, कहानी को सुनकर चित्र बना सकें व रंग भर सकें। • विभिन्न वस्तुओं का इस्तेमाल करते हुए चित्रादि बना सकें। • रंगोली / माँडणे बना सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–2 : द्वितीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• अपने परिवेश में सुनी कविता, कहानी, गीत व घटनाक्रम को क्रमबद्धता के साथ कह सकें। • उचित गति को ध्यान रखते हुए सही वाक्य संरचना के साथ विभिन्न संदर्भों के बारे में बता सकें। • कक्षा कक्षीय चर्चा को ध्यान से सुन सकें और अपनी बात को स्पष्टता के साथ अपनी भाषा में रख सकें।

2.	**पढ़ना और समझना**	• चित्र, कहानी, कविता आदि को आनन्द व रुचि के साथ पढ़ सकें। • वर्णमाला के सभी वर्णों को पहचानते हुए लघु एवं दीर्घ मिश्रित मात्रा युक्त शब्द एवं सरल वाक्यों को पढ़ सकें। • पहेलियों को पढ़कर समझ सकें एवं हल कर सकें। • पढ़ी सामग्री में से मुख्य बातों/पात्रों को बता सकें।
3.	**लिखना**	• सीखी गई सभी मात्राओं की ध्वनि को पहचानते हुए शब्दों का लेखन कर सकें। • परिचित, अपरिचित शब्दों/वाक्यों का श्रुतलेखन कर सकें। • प्रश्नों को सुनकर व पढ़कर छोटे वाक्यों में उत्तर लिख सकें । • विषयवस्तु से संबधित 3–4 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• विभिन्न प्रकार के चित्रों में अपनी कल्पना के आधार पर रंग संयोजन कर सकें। • अँगूठे की छाप से एवं विषयवस्तु के आधार पर स्वयं चित्र बना सकें।

क्र. सं.	**अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक**	**कक्षा–2 : तृतीय टर्म** **पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु**
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• विभिन्न कविताओं को हावभाव एवं लय के साथ सामूहिक रूप से सुना सकें, सुनी/पढ़ी पहेलियों को पूछ सकें एवं चुटकुले सुनाने की पहल कर सकें। • विषयवस्तु से संबंधित निर्देशों को सुनकर समझ सकें एवं उनकी अनुपालना कर सकें। • चित्रों एवं विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु से जुड़े प्रसंगों के संदर्भ में चल रही चर्चा में अपनी बात को स्पष्टता के साथ रख सकें एवं सुनी हुई घटनाओं को अपने शब्दों में सुना सकें। • विभिन्न प्रकार के सवालों के जवाब बिना किसी झिझक के अभिव्यक्त कर सकें।
2.	**पढ़ना और समझना**	• पाठ्य सामग्री को आनन्द के साथ पढ़ सकें। • लघु व दीर्घ मात्राओं की ध्वनियों को पहचानते हुए छोटी कहानी/कविता को पढ़ कर सुना सकें। • निर्देशों को पढ़कर समझते हुए कार्य कर सकें। • वर्णमाला का अनुप्रयोग कर सकें।
3.	**लिखना**	• सीखी गयी मात्राओं एवं वर्णों का प्रयोग करते हुए परिचित एवं अपरिचित शब्दों व वाक्यों को लिख सकें। (स्वयं, श्रुतलेख एवं देखकर) • प्रश्नों के उत्तर लिख सकें। संदर्भ के अनुसार 4 से 6 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें। छोटी–छोटी कहानी, कविता का सृजन कर सकें।
4.	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• स्वयं चित्र बना सकें एवं कल्पना के आधार पर सफाई के साथ रंग संयोजन कर सकें। • विभिन्न प्रकार के मुखौटे बना सकें। • अभिनय और विभिन्न प्रकार की आवाजों को निकालने का प्रयास कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–2 : चतुर्थ टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• विभिन्न प्रकार की कविताओं को हावभाव एवं लय के साथ सामूहिक रूप से पहल के साथ सुना सकें। • विभिन्न प्रसंगों के संदर्भ में चल रही चर्चा में अपनी बात को स्पष्टता के साथ रख सकें। • सुनी या पढ़ी हुई विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु को अपने शब्दों में सुना सकें। • विभिन्न प्रकार के सवालों के जवाब बिना किसी झिझक के अभिव्यक्त कर सकें।
2	**पढ़ना और समझना**	• भाव के अनुसार उचित बल देते हुए कविता / कहानी को लघु–दीर्घ मात्रायुक्त शब्दों, संयुक्ताक्षरों आदि को उनके उच्चारण भेद एवं विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ कर सुना सकें। • विभिन्न प्रकार की कविताओं / कहानियों / चुटकुलों को आनन्द के साथ पढ़ सकें।
3	**लिखना**	• किसी चित्र और घटना के बारे 4–6 वाक्य लिख सकें एवं प्रश्नों को सुनकर / पढ़कर वाक्यों में उत्तर लिख सकें। • विभिन्न नामों को वर्णमाला के क्रम में लिख सकें। • विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु से संबंधित शब्दावलियों को स्वयं के परिवेशीय शब्दों में लिख सकें। • कहानी एवं कविता का सृजन कर सकें।
4	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• विषयवस्तु के आधार पर स्वयं चित्र बना सकें एवं उचित रंग संयोजन कर सकें। • विभिन्न प्रकार के मुखौटे बना सकें एवं परिवेशीय विभिन्न आवाजों को निकाल सकें।

कक्षा–2 : प्रथम टर्म

पाठवार अधिगम कार्य / उद्देश्य

पाठ–1 : चक्कर (कविता)

- कविता को पढ़कर आनन्द लेना और समूह में प्रस्तुत करना।
- अपने अनुभव एवं कल्पना के आधार पर बात को सहज ढंग से कहना।
- शब्दों व चित्रों के मध्य सहसंबंध स्थापित करना।
- परिवेशीय खेलों, समूह खेल की विशेषताओं को समझना एवं अपने परिवेश में खेले जाने वाले खेलों की जानकारी प्राप्त करना।
- ध्वनि के आधार पर नवीन शब्दों की पहचान एवं सृजन करना।
- पढ़कर समझना व उसका आवश्यकतानुसार अनुप्रयोग

पाठ– 3 भालू ने खेली फुटबॉल (कहानी)

- कहानी को स्वयं पढ़ते हुए समझना एवं समूह में व्यक्त करना।
- संयुक्त वर्णों की पहचान कर उनकी ध्वनि का उच्चारण कर लिखना। (ऋ व क्ष)
- वर्णों की ध्वनि पहचान के साथ उचित प्रयोग करना। (स, श)

  स्वयं की कल्पना एवं विषयवस्तु के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।
- अपनी पसंद से रंगों का संयोजन करना।
- स्वयं की कल्पना के आधार पर चित्र बनाना।

करना।

- अनुभव के आधार पर लेखन करना।

म्हारा माँडणा

- परिवेशीय संस्कृति के साथ अपने अनुभवों को जोड़ना।
- सृजनात्मक रूप से माँडणे बनाना।

पाठ – 2 शेर और चूहा (कहानी–कविता शैली में)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में बताना।
- नवीन संयुक्त वर्णों की पहचान के साथ उनकी ध्वनि के उच्चारण को समझना। (श्र, त्र, ज्ञ)
- परिवेशीय बोली का मानक भाषा से सहसंबंध बनाना।
- घटनाक्रम को स्मरण करते हुए शब्दों के क्रम को समझना।
- एक जैसी ध्वनि को समझकर, पहचान करना।
- पठित कविता/कहानी में से स्मरण के आधार पर छोटे–छोटे प्रश्न पूछना।
- पठित कहानी को स्वयं पुनः क्रम से लिखना।
- नए मानक शब्दों से परिचित होकर उनका अनुभव के आधार पर उपयोग बताना।
- उचित रंग संयोजन के द्वारा अभिव्यक्त करना।

पाठ– 4 पानी बरसा जोर से (कविता)

- कविता को स्वयं पढ़कर सुनाना।
- विषयवस्तु आधारित प्रश्नों के उत्तर पूर्वावलोकन व अपने अनुभव के आधार पर समझकर लिखना।
- परिवेशीय संदर्भ में चित्रों से जुड़े विचार को समझना।
- कविता को आगे बढ़ाते हुए लिखना, कविता की पंक्तियों को क्रम से लिखना।
- चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करना।
- कविता पढ़कर रुचि से सुनाना।

फड़–कावड़ की बात

- राजस्थानी परिवेश की संस्कृति के साथ परिचित होना एवं अपनी बात को इसके साथ जोड़ते हुए अभिव्यक्त करना।
- कहानी सुनकर उस पर प्रश्न करना एवं बातचीत करना।

कक्षा–2 : द्वितीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–5 : हाथी और भँवरे की दोस्ती (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना।
- विषयवस्तु को समझकर, प्रश्नों के उत्तर लिखना।
- ध्वनियों को पहचान कर वर्गीकृत करते हुए संबंधित शब्द/वाक्यों की संरचना करना।
- तर्क के साथ अपनी बात रखना एवं घटना के साथ स्वयं को जोड़ते हुए अपने विचार रखना।
- सुनी/पढ़ी कहानी की घटनाओं को क्रमानुसार समझ के साथ अभिव्यक्त करना।
- एक–अनेक की समझ बनाकर नए शब्द बनाना एवं वचन को समझना।
- रुचि के साथ चित्र बनाना/रंग भरना।
- निर्देशों को पढ़कर समझते हुए क्रम से कार्य करना।

पहेलियाँ

- पहेलियों को पढ़कर समझना एवं उनके उत्तर खोज कर

पाठ –7. चार चने (कविता)

- कविता को पढ़कर आनन्द लेना।
- कविता को पढ़कर/गाकर समूह में सुनाना व लिखना।
- मुद्रा की पहचान करना संख्या का मिलान करना।
- लिंग की पहचान करना।
- चित्र में उचित रंग संयोजन करना।

गौरैया

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़कर उससे संबंधित प्रश्न पूछना।
- पढ़कर स्वयं गाकर सुनाना।

पाठ– 8 बगीचे का घोंघा (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं अपने अनुभव को समूह में बताना।

बताना।

- नवीन पहेलियों का संकलन करना एवं कक्षा में साथियों से पूछना।

पाठ – 6 खिचड़ी (कहानी)

- पढ़कर आनंद लेना एवं अपने अनुभव को समूह में बताना।
- मानक भाषा का अपनी भाषा के साथ सहसंबंध जोड़ते हुए महत्त्व देना।
- विषयवस्तु (पढ़ी गई सामग्री) के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के जवाब देना।
- नए शब्दों का तुक एवं ध्वनि के अनुसार सृजन करना। जैसे– (गा चिड़ी – आ चिड़ी)
- संयुक्त वर्णों को पहचानना और उनका संकलन करना।
- अपने परिवेशीय व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्ति के बारे व उनके पेशेवर नाम की जानकारी प्राप्त करना एवं उनके काम के प्रति संवेदनशील होना।
- अपनी पसंद/नापसंद को लिखकर बताना।
- वचन के प्रयोग को समझना एवं क्रिया शब्द बनाकर लिखना एवं लिंग की पहचान कर नए शब्द लिखना।
- परिवेशीय शब्दों का मानक भाषा के साथ सहसंबंध बनाना।
- विषयवस्तु को समझकर प्रश्नों के जवाब देना।
- पुनरावृत्ति वाले शब्द/शब्द–युग्मों का वाक्यों में प्रयोग करना ।
- वचन के अनुसार शब्द–रूप में परिवर्तन कर लिखना।
- मात्रा के अनुसार शब्दों की संरचना करना।
- स्वयं चित्र बनाकर रंग भरना।

बाजण बाजा सोहणा

- परिवेशीय वाद्य यंत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करना उन्हें समूह में व्यक्त करना।
- चित्र के माध्यम से अभिव्यक्ति करना।
- आवाज़ सुनकर वाद्य यंत्र को पहचानना।

कक्षा–2 : तृतीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–9 : खीरा खाऊँ कचर–कचर (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना।
- स्कूल की भाषा के साथ परिवेशीय भाषा का सहसंबंध बनाना।
- ध्वनि के आधार पर नुक्ता – बिना नुक्ता वाले शब्दों के उच्चारण सम्बन्धी अन्तर को समझना।
- पाठ में आए संवादों में पात्रों की पहचान करना एवं संवादों को बोल कर अभिव्यक्त करना।
- पाठ के आधार पर पूछे गए प्रश्नों एवं कल्पना के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के जवाब देना ।
- विभिन्न खाद्य पदार्थों को खाने के दौरान उनसे निकलने वाली आवाज़ों सुनकर समझना एवं उनमें अंतर बताना।
- मुखौटे लगाकर कहानी को अभिनय के रूप में करना।

पाठ 10– दादी की रोटी (कहानी)

- कहानी को पढ़कर आनन्द लेना एवं अपने अनुभवों को समूह में सुनाना।
- नए शब्दों को समझकर उनका अपनी भाषा में प्रयोग करना।
- वस्तुनिष्ठ एवं अन्य अनुमान/कल्पना आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना।
- घटनाओं के क्रम को समझकर लिखना।
- नए शब्द बनाकर/ ढूँढकर संदर्भ के अनुसार उनका प्रयोग करना ।
- चित्र में कविता के अनुरूप रंग भरना।

पाठ 11– सूरज का रूमाल (कहानी)

- पढ़कर समझना एवं नए शब्दों को चिह्नित करना।
- नए शब्दों को संदर्भ से समझना, मातृभाषा में मानक शब्दों को समझना।

चुटकुले

- चुटकुलों को पढ़कर आनन्द लेना।
- वैसे ही अन्य चुटकुले कक्षा में सुनाने की पहल करना।

- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों एवं क्यों, क्या, कैसे वाले प्रश्नों के जवाब देना।
- अनुभव के आधार पर सोचकर तार्किक रूप से अपनी बात को समूह के मध्य बताना।
- समान लय वाले नए शब्द बनाना।

कक्षा–2 : चतुर्थ टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–12 : आई एक खबर (कविता)

- कविता को सुनकर दोहरान करना एवं पढ़कर सुनाना।
- नवीन शब्दों को समझकर उनका अनुप्रयोग करना।
- अनुनासिक शब्दों के उच्चारण को समझना।
- सूचनाओं के आदान–प्रदान की सामान्य समझ बनाना।
- अपने अनुभव समूह में प्रस्तुत करना।
- पढ़कर समझी विषयवस्तु के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना।
- योजक चिह्न (और के संदर्भ में) को समझ पाना एवं उसका अनुप्रयोग अपने लेखन में करना।

मछली नहीं मगर

- चित्र कथा को चित्र के माध्यम से व्यक्त करना।

पाठ– 13 : समुद्र खारा क्यों? (कहानी)

- कहानी को स्वयं पढ़ना एवं समूह में सुनाना।
- पाठ में आए नवीन शब्दों के अर्थ को सदंर्भ से समझना और उनका अनुप्रयोग अपने लेखन में करना।
- घटनाओं के साथ–साथ विषयवस्तु की क्रम से समझ तैयार करना।
- विषयवस्तु को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना एवं अपनी राय/ विचारों को अभिव्यक्त करना।
- कहानी के पात्रों के बारे में कल्पना कर चित्र बनाना तथा कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना।

पाठ– 14 : हवा (वर्णन)

- पढ़कर वर्णन को समझना एवं अपने अनुभव के साथ जोड़ना।
- नए शब्दों के संदर्भ को समझते हुए अनुप्रयोग करना।
- संदर्भ के अनुसार अनुभव के आधार पर (परिवेशीय) प्रश्नों के उत्तर देना।
- 'र' के विविध रूपों को समझना।
- समूह चर्चा में अपनी बात को अभिव्यक्त करना।

खोजबीन

- पढ़कर समझते हुए पक्षियों को उनके घोंसले तक पहुँचाना।
- इस तरह की अन्य और पहेलियाँ खोज कर संकलित करना।

पाठ– 15 छुटकी उल्ली (कहानी)

- कहानी को पढ़ना एवं उसमें क्या बात कही जा रही है उसे समझना।
- शब्दों को पढकर समझना एवं नए शब्द निर्माण करना।
- परिवेशीय जानकारी के आधार पर जवाब देना।
- अपनी भाषा में प्रचलित नये शब्दों का संकलन कर लिखना।
- संख्या को शब्द रूप में अभिव्यक्त करना।
- क्रिया शब्दों को समझ कर अनुप्रयोग करना।
- रंगाकन के माध्यम से सृजनात्मक अभिव्यक्ति करना।

गीत

- स्वयं पढ़ने की ललक होना।
- गीत के रूप में गाना।

पाठ्यक्रम कक्षा : 3 से 5

(राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा निर्धारित)

बोलना–सुनना

- दूसरों के विचार को ध्यान एवं धैर्य के साथ सुनकर समझना और अपनी सोच विकसित करना।
- किस्से–कहानियाँ सुनकर आनंद प्राप्त करना।
- ऐतिहासिक घटनाएँ सुनकर अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में जानना।
- कविताएँ सुनकर उसके अर्थ एवं भाव को समझना एवं आनन्द की अनुभूति करना।
- नए शब्दों को सुनकर उनके अर्थ समझना।
- रोचक कहानी–कविता आदि सुनकर अपने अनुभव में वृद्धि करना।
- सुने गए भावों–विचारों पर चिन्तन करना।
- सहज रूप से अपनी बात कह सकें
- परिस्थिति एवं अवसर के अनुरूप अपनी बात कह सकना।
- सशक्त रूप से अपनी बात कहना।
- बोलने के शिष्टाचार का पालन करना।
- गीत–कविता आदि को लय–ताल के साथ बोलना।

पढ़ना

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़ते समय अपरिचित शब्दों का संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा– कहानी, गीत, संवाद, निबंध आदि से परिचित होकर उन विधाओं की अन्य पुस्तकें पढ़ना।
- पुस्तकालय संबंधी सक्रियता होना।
- दूसरे के विचारों को पढ़कर समझना।
- पाठ्य सामग्री द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न होना।
- पाठ्य सामग्री (अखबार, पत्र–पत्रिका आदि) को पढ़कर उन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (जैसे– टी.वी., इन्टरनेट, मोबाइल आदि) परिवेश में उपलब्ध विज्ञापन आदि को पढ़कर समझ विकसित होना।

लिखना

- स्पष्टता के साथ लिखना।
- प्रश्न के अनुरूप उत्तर को अपने शब्दों में लिखना।
- आत्मविश्वास के साथ लिखना।
- भावों, विचारों, अनुभवों व चिन्तन को अपने शब्दों में लिखना।
- विषय के अनुसार विचारों को लिखित अभिव्यक्ति करना।
- विभिन्न परिस्थितियों/काल्पनिक घटनाओं को अपने शब्दों में लिख सकें
- सुनकर लिख सकें
- विभिन्न अवसरों पर निबंध, कहानी, कविता, स्लोगन लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी रचनात्मक अभिवृत्ति का विकास करना।
- कविता, कहानी आदि का सृजन करना।
- किसी कविता, कहानी आदि को आगे बढ़ाना।

परिवेशीय सजगता

- प्राकृतिक और अन्य घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
- देखी–सुनी घटनाओं के घटनाक्रम को समझना और समझाना।
- आस–पास मौजूद हालातों आदि के बारे में सवाल करना।
- अपने आस–पास मौजूद पशु–पक्षिओं, पेड़–पौधों, इमारतों, लोगों (बुजुर्गों, महिलाओं, चुनौती वाले लोगों,

• पठन द्वारा ज्ञान प्राप्ति एवं आनन्द प्राप्त में समर्थ होना। • पाठ में निहित मूल भाव, विचार या बिन्दु को समझना। • विषय–सामग्री के माध्यम से नए शब्दों का अर्थ जानना। • नए शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढना। • विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ना। • परिवेश में उपलब्ध पाठ्य सामग्री के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।	दोस्तों) के प्रति सम्मान, मित्रता, सहिष्णुता का भाव रखना। • व्यक्तिगत, घरेलू और विद्यालय स्तर पर चीज़ों के व्यर्थ इस्तेमाल को रोकना। **व्यावहारिक व्याकरण** • शब्द भण्डार में वृद्धि हेतु नए शब्द, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया, पर्यायवाची, विलोम, शब्द, लिंग, वचन कारक, उपसर्ग, प्रत्यय आदि की समझ विकसित करना। कक्षा स्तरानुरूप मुहावरे, लोकोक्ति व कहावतों का प्रयोग तथा विराम चिह्नों आदि की पहचान तथा इनका संदर्भ में उपयोग कर सकें

कक्षा–3: टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–3 : प्रथम टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• सुनी/पढ़ी कविता, गीत को लय एवं हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल करते हुए अभिव्यक्त कर सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे सकें। • सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें। • कक्षा–कक्षीय चर्चाओं में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • कविता/कहानी को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• उचित गति, स्पष्ट उच्चारण, भाव एवं आनन्द लेते हुए पढ़ सकें । • वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर सकें। • पठित सामग्री की समझ को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें विचारों एवं घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में बता सकें।
3.	**लिखना**	• सुन्दर, स्वच्छ एवं उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए किसी परिचित घटना/चित्रों आदि को देख कर 6–8 वाक्यों में लिख सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख सकें। • विविध प्रकार के अनुमान एवं कल्पना आधारित प्रश्नों के उत्तर स्वयं की भाषा में लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• सर्वनाम शब्दों की पहचान एवं प्रयोग कर सकें। • विभिन्न संज्ञा नामों का वर्गीकरण कर सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में स्वतन्त्र रूप से संज्ञा नाम बता सकें (लिखित/मौखिक)।

5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• चित्र के अनुसार रंग का संयोजन कर सकें। • कागज से मुखौटे या अन्य वस्तुएँ बना सकें। • परिवेश से सम्बन्धित विभिन्न पात्रों का अभिनय एवं संबंधित पात्र के अनुरूप संवाद बोल सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–3 : द्वितीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में सुनी / पढ़ी कविता, गीत को लय एवं हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल करते हुए अभिव्यक्त कर सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे सकें। • सुनी घटना / कहानी / प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें। • कक्षा –कक्षीय चर्चाओं में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • कविता / कहानी को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• उचित गति, स्पष्ट उच्चारण, प्रभाव एवं आनन्द लेते हुए पढ़ सकें । • वाक्यों / निर्देशों / प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर सकें। • पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को पढ़ने के प्रति पहल कर सकें एवं उससे संबंधित अनुभव कक्षा में बता सकें।
3.	**लिखना**	• सुन्दर, स्वच्छ एवं उचित विराम चिह्नों के प्रयोग के साथ किसी परिचित घटना / चित्रों आदि को देख कर मानक शब्दों का प्रयोग करते हुए 6–8 वाक्यों में लिख सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता / कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख सकें। • विविध प्रकार के अनुमान एवं कल्पना आधारित प्रश्नों के उत्तर स्वयं की भाषा में लिख सकें। • विचारों, घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• विशेषण शब्दों की पहचान करते हुए उनका प्रयोग कर सकें। • वचन एवं पर्यायवाची शब्दों की पहचान एवं प्रयोग कर सकें। • विशेषण शब्दों की पहचान कर पाना एवं उनका वाक्यों में प्रयोग कर सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• चित्र के अनुसार रंग का संयोजन कर सकें। • कागज से वस्तुएँ बनाकर उनको बनाने की विधि बता पाना। • परिवेश से सम्बन्धित विभिन्न पात्रों का अभिनय एवं संबंधित पात्र के अनुरूप संवाद बोल सकें।

6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–3 : तृतीय टर्म पाठ्यक्रणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनना– सुनाना और बोलना**	• सुनी/पढ़ी कविता, गीत लय और हावभाव एवं पहल साथ स्पष्ट शब्दों के साथ अभिव्यक्त कर सकें। • क्या, कहाँ, कैसे, कौन से, क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें। • विभिन्न परिवेशीय एवं सामाजिक मुद्दों पर कक्षा में होने वाली चर्चा में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। दिए गए संदर्भ के अनुसार संवाद को कल्पना करते हुए बता सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• पाठ्य पुस्तक एवं पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़ने के प्रति रुचि बन सके तथा विराम चिह्नों को ध्यान में रखते हुए उचित गति व स्पष्ट उच्चारण, भाव के साथ पढ सकें। • सरल वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों एवं पहेलियों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • संदर्भ एवं विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में वाक्यों के लिए सही शब्द का चुनाव कर सकें। • पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर सकें। • पठित सामग्री में आए नवीन शब्दों/परिवेशीय शब्दों के अर्थ एवं मानक रूप को समझ सकें।
3.	**लिखना**	• मानक शब्दों का प्रयोग करते हुए उपयुक्त दूरी, सीधी लाइन, शिरो रेखा के प्रयोग के साथ किसी परिचित घटना/चित्रों आदि को देखकर 6 से 8 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• वचन, विशेषण शब्दों, विपरीत अर्थ, सर्वनाम शब्दों, संज्ञा शब्दों एवं पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर सकें एवं उनका वाक्यों में प्रयोग कर सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• कागज से अपनी मन पसंद की सामग्री बना सकें। चित्र के अनुसार रंग का संयोजन कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–3 : चतुर्थ टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना एवं समझकर बोलना**	• सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अभिव्यक्त कर सकें एवं दूसरों के विचारों को धैर्य के साथ सुन सकें। • विभिन्न संदर्भों में अपनी बात को पसंद या नापसंद के संदर्भ में रख सकें। • सुनी कविता, गीत को लय और हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल के साथ अभिव्यक्त कर सकें। • कविता/कहानी को सुनकर उसके सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें एवं संवाद बनाकर बोल सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• विराम चिह्न को ध्यान में रखते हुए उचित गति व स्पष्ट उच्चारण, भाव के साथ पढ़ सकें। • सरल वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • पाठ्य सामग्री को प्रवाह के साथ पढ़ सकें एवं पठित सामग्री की समझ को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें। • पहेलियों को पढ़कर उनके अर्थ का अनुमान लगाकर उत्तर दे सकें तथा विचारों एवं घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में बता सकें। • विषयवस्तु को पढ़कर उससे सम्बन्धित जानकारियों को एकत्रित कर सकें एवं पठित सामग्री में आए नवीन शब्दों/परिवेशीय शब्दों के अर्थ एवं मानक रूप को समझ सकें।
3.	**लिखना**	• सुन्दर एवं साफ लिखावट के साथ 6 से 8 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें। • विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु के आधार पर क्रमबद्धता के साथ स्वयं कहानी लिख सकें। • संदर्भ के अनुसार अपने अनुभवों एवं पूर्व अवलोकित चीज़ों के बारे में लिखकर व्यक्त कर सकें। • प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• संज्ञा शब्दों की पहचान के साथ वर्गीकरण कर सकें। • सर्वनाम, विशेषण, पर्यायवाची, लिंग,वचन, मुहावरों की पहचान एवं प्रयोग कर सकें। • क्रिया की आरंभिक समझ बन सके।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• विभिन्न संदर्भों से संबंधित चित्र बना सकें एवं उचित रंग संयोजन कर सकें। • संदर्भ के अनुसार अभिनय कर सकें। • विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री को एकत्रित कर उनके बनाने की विधि को जान सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। सुनी व पढ़ी कहानी, कविता, विशेष विषयवस्तु से सम्बन्धित एवं स्वतंत्र रूप से चित्र बना सकें एवं नाम दे सकें।

कक्षा–3 : प्रथम टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–1 : मन करता है (कविता)

- कविता को हाव भाव एवं उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना।
- अपने अनुभवों को समूह चर्चा के दौरान शेयर करना।
- कविता को समझ कर उसके अर्थ से सहसंबंध जोड़ना।
- कल्पना करते हुए प्रश्नों के उत्तर लिखना एवं स्वयं के विचारों को लिखकर व्यक्त करना।
- शब्दों के अन्त में आ रही ध्वनि के आधार पर नए शब्द बनाना।
- अपनी मनपंसद चीज़ों के बारे में परिवेशीय भाषा के साथ सहसंबंध जोड़ कर लिखना।
- भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन – विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण करना।

चाँद की खातिर

- पढ़ने की ललक होना।
- पढ़कर कक्षा में कहानी को अपने शब्दों में सुनाना।

पाठ–2 : आसमान गिरा (कहानी)

- कहानी को धाराप्रवाह गति के साथ पढ़ना।
- कहानी पढ़कर उससे सम्बन्धित बात को अपने शब्दों में बता पाना एवं उससे सम्बन्धित प्रश्न बनाकर पूछना।
- किसी कथन, संवाद एवं दिए गए प्रश्नों के आधार पर पूरे वाक्यों में विस्तार से उत्तर देना।
- संयुक्ताक्षरों से सम्बन्धित शब्दों को पढ़ना।
- पूर्व ज्ञान के आधार पर विभिन्न जानवरों के नामों को लिखकर वर्गीकरण करना।
- पढ़कर विलोम एवं सर्वनाम शब्दों शब्दों को समझना।
- अपने अनुभवों को समूह में रख पाना, दूसरों के विचार सुनाना।
- अभिनय एवं मुखौटों का निर्माण करना।

पाठ –3 रेगिस्तान का जहाज (कहानी)

- कहानी को पढ़कर यात्रा के प्रसंग को समझना एवं अपने अनुभव के साथ जोड़ना।
- प्रश्नों को पढ़कर समझना एवं अनुभव के आधार पर अभिव्यक्त करना।
- शब्दों को उनके अर्थ के साथ सहसंबंध बनाते हुए पढ़ना।
- पढ़कर नई जानकारियों की खोज करना एवं समूह में शेयर करना।
- पहेलियों को पढ़कर समझना एवं हल करना।
- अपने अनुभवों को चर्चा के माध्यम से बताना।
- वाक्य को पढ़कर तर्क के साथ अपने विचार बताना।
- संज्ञा नामों को वर्गीकृत करना।
- चित्र के आधार पर वाक्य निर्माण करना।

चित्रकथा

- चित्रकथा के आधार पर क्रम से कहानी बनाकर बताना।
- चित्र को देखकर उपसमूहों में चर्चा कर पाना और समूह में अपने समूह की बात को रखना।

पाठ– 4 ना धिन धिन्ना (कविता)

- पढ़कर समझना और समूह में व्यक्त करना।
- शब्दों के आधार पर वाक्य सृजन करना।
- पढ़कर समझते हुए नवीन जानकारियों को खोजना एवं समूह में अभिव्यक्त करना।
- परिवेशीय वाद्य यंत्रों से परिचित होना, चित्रांकन एवं रंग संयोजन करना।
- प्रश्नों के कारण सहित उत्तर लिखना।
- जानकारी एकत्रित करना और उसे वर्गीकृत करना।
- समूह में पढ़ी कविता को हावभाव ,लय व आनन्द के साथ गाना।

पहेलियाँ

- पहेलियों को पढ़कर समझना एवं उनके हल स्वयं खोजना।
- नवीन पहेलियों का संकलन करना और कक्षा में पहेलियाँ पूछ पाने की पहल करना।

कक्षा–3 : द्वितीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–5 : मैं सड़क हूँ (आत्मकथा)

- विषयवस्तु को पढ़कर समझना एवं जानकारी प्राप्त करते हुए नियमों के प्रति सजग होना।
- नवीन शब्दों से परिचय कर स्वयं की भाषा में प्रयोग करना।
- पढ़ी गई सामग्री को समझकयर सही/गलत को समझ पाना एवं तर्क के साथ जवाब तलाश कर बताना।
- विराम चिह्नों को समझकर स्वयं के लेखन में इस्तेमाल करना तथा सुन्दर व सफाई के साथ लेखन करना।
- विशेषण शब्दों को समझकर स्वयं के लेखन में इस्तेमाल करना।
- अपने मनपसंद विषय पर स्वयं की कल्पना के आधार पर लिखना।
- चित्र देखकर उस पर विवरणात्मक अनुच्छेद लिखना।
- संकेत चिह्नों को समझ कर समूह में व्याख्यित करना।

पाठ– 6 अजमेर की सैर (यात्रा वृत्तांत)

- पढ़कर समझना एवं समूह में संबंधित जानकारी के साथ स्वयं के यात्रा के अनुभवों को भी जोड़ना और समूह में व्यक्त करना।
- पढ़ी गई सामग्री को समझकर सही/गलत को समझ पाना एवं कारण सहित प्रश्नों के जवाब लिखना।
- पढ़ी सामग्री में से मुहावरों को समझना एवं खोज कर लिखना।
- वाक्य सृजन के कौशल में अधिकता के लिए लिखे जाने वाले शब्दों को समझना एवं अपनी लेखनी में प्रयोग करना।
- पढ़कर समझना एवं वचन का सही प्रयोग करना।
- निर्देशानुसार स्वयं की बात तर्क के साथ समूह में बताना।

पाठ – 7 पतंगों का मौसम (कविता)

- पढ़कर कविता के भाव को समझना ।
- कविता को समूह में लय एवं हावभाव के साथ सुनाना।
- अपनी पसंद को कारण सहित व्यक्त करना।
- तुक के अनुसार शब्द बनाना।
- विशेषता वाले शब्दों को समझकर पहचानना एवं विशेषण का वचन के साथ प्रयोग करना।

पाठ– 8 कौन है चोर (कहानी)

- कहानी को धाराप्रवाह गति से पढ़कर समझना।
- नवीन शब्दों को समझ कर स्वयं की भाषा में इस्तेमाल करना।
- खोज करना एवं कक्षा में चुटकुलों को कहना।
- पढ़कर समझना, वचन का सही इस्तेमाल करते हुए वाक्य बनाना।
- प्रश्नों को पढ़कर समझना, उनके उत्तर स्वयं एवं कल्पना के आधार पर लिखना।
- शब्द की अन्तिम ध्वनि एवं संयुक्ताक्षर को समझना तथा स्वयं खोजकर लिखना।
- मुहावरों को समझ पाना, खोजकर स्वयं अर्थ का पता लगाने के लिए विभिन्न स्रोतों का पता लगाना।
- पर्यायवाची शब्दों को पढ़कर समझना।

ये तेरा घर ये मेरा घर

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़ी हुई कविता को समूह में सुनाना।
- चित्र के अनुसार रंग संयोजन करना।

कक्षा–3 : तृतीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–9 : छगन और बौने (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं पाठ की विषयवस्तु के बारे में समूह में अभिव्यक्त करना।
- कहानी को पढ़ने के प्रति रुचि जागृत करना।
- उचित शब्दों का चयन करते हुए वाक्य सृजन करना।
- विलोम शब्दों की पहचान करना एवं निर्देशों को समझकर वाक्य में प्रयोग करना।
- विशेषण शब्दों की पहचान कर उनका प्रयोग करना।
- प्रश्नों के उत्तर अपनी कल्पना के आधार पर कारण सहित लिखना।
- कागज से बनायी जाने वाली चीज़ों की खोजकर संकलन करना।
- चित्र दृश्य में उचित रंग संयोजन करते हुए कल्पना के आधार पर वाक्य बनाना।

पाठ – 10 पलक की दौड़

- पाठ को पढ़कर समझना एवं उसमें निहित भाव को व्यक्त करना।
- शब्दों को अर्थ के साथ मिलाकर पढ़ना एवं उनका अपनी भाषा में अनुप्रयोग करना।
- विशेष रूप से सक्षम लोगों के प्रति संवेदनशील हो पाना एवं आवश्यकतानुसार उनकी मदद करना।
- प्रश्नों को पढ़कर समझना, मौखिक रूप से अभिव्यक्त करना एवं तर्क के साथ उत्तर लिखना।
- विपरीत अर्थ वाले शब्द को पढ़कर समझना एवं उनका सही प्रयोग करना।
- खेलों के आधार पर इनमें काम आने वाली सामग्री को समझना।
- चित्र दृश्य के आधार पर अपने विचारों को लिखना एवं उचित रंग संयोजन करना।

पाठ–13 : चित्रकार मोर (कहानी)

- कहानी को धारा प्रवाह गति से पढ़ना एवं उसके प्रसंग को समूह में सुनाना।
- प्रश्नों के उत्तर स्व विवेक एवं तर्क के साथ देना।
- कहानी के घटनाक्रम को सही क्रम में लिखना।
- संज्ञा, वचन की समझ के साथ प्रयोग करना।
- मुहावरों के बारे में और जानने की उत्सुकता रखना।
- कक्षा में विभिन्न मुद्दों पर होने वाली चर्चा में भागीदारी करना एवं जानकारी को बताना।
- निर्देशानुसार रंग संयोजन करना।
- खेल के नियमों को समझना, खेल में सहभागिता करना।
- परिवेशीय पक्षियों के बारे में जानकारी एकत्रित करना एवं नाम, रंग व बोली को पहचानकर लिखना।

पाठ–14 : काठ की पुतलीः नाचे, गाए (नाटक)

- नाटक को रुचि के साथ पढ़ना और संवादों को बोलने के प्रति पहल करना।
- शब्दों के अर्थ को पढ़कर समझते हुए अनुप्रयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर कारण सहित लिखना।
- लिंग की पहचान के साथ उपयुक्त प्रयोग करना।
- विभिन्न पात्रों का अभिनय करते हुए संवाद बोलना।
- पढ़ने के प्रति रुचि बना पाना एवं नवीन जानकारियों को जानने के प्रति रुचि रखना।

पाठ –11 भारत कितना प्यारा है (कविता)

- कविता को धाराप्रवाह गति से पढ़कर समझना।कविता के भाव को समझ कर बताना।
- अनुस्वार व अनुनासिक वाले शब्दों को समझकर पढ़ना एवं लिखना।
- स्चयं को अच्छी लगने या न लगने वाली चीज़ों के बारे में एवं अनुभव को चल रही चर्चा में अभिव्यक्त करना।
- स्वयं की बात को सोचकर लिखना एवं किसी पात्र पर कल्पना के साथ अपने विचार लिखना।
- मानक शब्दों को अपनी भाषा में प्रयोग करना।
- वचन की समझ एवं उसे वर्गीकृत करना।
- कविता को हावभाव के साथ अभिव्यक्त करना।

पाठ–12 इमरती बाई (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं उसके भाव को समूह में बताना।
- नवीन शब्दों के अर्थ को पढ़कर समझना एवं सही जगह उनका अनुप्रयोग करना।
- प्राकृतिक एवं अन्य घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बताना एवं उनके प्रति संवेदनशील होना।
- प्रश्नों के उत्तर कारण सहित बताना।
- सर्वनाम शब्द की पहचान व समझ के साथ सही जगह अनुप्रयोग करना।
- एक शब्द के समानार्थी शब्दों को समझना।
- राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में राज्य द्वारा घोषित पशु, पुष्प, पक्षी एवं वृक्ष को समझना।

चिरमी

- परिवेशीय संस्कृति से परिचित होना।
- स्वयं पढ़ने के प्रति रुचि व ललक पैदा होना।
- गाकर समूह में सुनाना।

पाठ–15 : छोटे से बड़े (कवितामय कहानी)

- नई विधा से परिचित होना एवं उचित गति के साथ पढ़ना। सोचकर अपनी बात को अभिव्यक्त करना।
- कविता के भाव को समझ कर व्यक्त करना।
- संज्ञा, विलोम एवं क्रिया को समझना।
- प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखना।
- पर्यायवाची शब्दों के बारे में जानकारी बढ़ाना।
- वर्णमाला का अनुप्रयोग करना।
- स्वयं के अनुभवों को किसी संदर्भ में लिखकर बताना।
- स्वयं कार्य करने के प्रति रुचि दिखाना।

पाठ–16 : रानी की मुसीबत (कहानी)

- धारा प्रवाह गति से पढ़कर उसके भाव को व्यक्त करना।
- प्रश्नों को पढ़कर समझना एवं उत्तर लिखना।
- कहानी के आधार पर घटनाओं को बताना।
- अनुभव के आधार पर लेखन करना।
- लिंग एवं क्रिया शब्दों को समझना।
- अनुमान के आधार पर लेखन करना।
- चित्र के आधार पर क्रमिकता को समझते हुए कहानी बनाना एवं लेखन करना।

मुझे बचाओ

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़ी हुई कहानी को समूह में शेयर करना।
- संबंधित जानकारी के आधार पर प्रश्न करना।

कक्षा–3 : चतुर्थ टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–13 : चित्रकार मोर (कहानी)

- कहानी को धारा प्रवाह गति से पढ़ना एवं उसके प्रसंग को समूह में सुनाना।
- प्रश्नों के उत्तर स्व विवेक एवं तर्क के साथ देना।
- कहानी के घटनाक्रम को सही क्रम में लिखना।
- संज्ञा, वचन की समझ के साथ प्रयोग करना।
- मुहावरों के बारे में और जानने की उत्सुकता रखना।
- कक्षा में विभिन्न मुद्दों पर होने वाली चर्चा में भागीदारी करना एवं जानकारी को बताना।
- निर्देशानुसार रंग संयोजन करना।
- खेल के नियमों को समझना, खेल में सहभागिता करना।
- परिवेशीय पक्षियों के बारे में जानकारी एकत्रित करना एवं नाम, रंग व बोली को पहचानकर लिखना।

पाठ–14 : काठ की पुतलीः नाचे, गाए (नाटक)

- नाटक को रुचि के साथ पढ़ना और संवादों को बोलने के प्रति पहल करना।
- शब्दों के अर्थ को पढ़कर समझते हुए अनुप्रयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर कारण सहित लिखना।
- लिंग की पहचान के साथ उपयुक्त प्रयोग करना।
- विभिन्न पात्रों का अभिनय करते हुए संवाद बोलना।
- पढ़ने के प्रति रुचि बना पाना एवं नवीन जानकारियों को जानने के प्रति रुचि रखना।

पाठ–15 : छोटे से बड़े (कवितामय कहानी)

- नई विधा से परिचित होना एवं उचित गति के साथ पढ़ना। सोचकर अपनी बात को अभिव्यक्त करना।
- कविता के भाव को समझ कर व्यक्त करना।
- संज्ञा, विलोम एवं क्रिया को समझना।
- प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखना।
- पर्यायवाची शब्दों के बारे में जानकारी बढ़ाना।
- वर्णमाला का अनुप्रयोग करना।
- स्वयं के अनुभवों को किसी संदर्भ में लिखकर बताना।
- स्वयं कार्य करने के प्रति रुचि दिखाना।

पाठ–16 : रानी की मुसीबत (कहानी)

- धारा प्रवाह गति से पढ़कर उसके भाव को व्यक्त करना।
- प्रश्नों को पढ़कर समझना एवं उत्तर लिखना।
- कहानी के आधार पर घटनाओं को बताना।
- अनुभव के आधार पर लेखन करना।
- लिंग एवं क्रिया शब्दों को समझना।
- अनुमान के आधार पर लेखन करना।
- चित्र के आधार पर क्रमिकता को समझते हुए कहानी बनाना एवं लेखन करना।

मुझे बचाओ

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़ी हुई कहानी को समूह में शेयर करना।
- संबंधित जानकारी के आधार पर प्रश्न करना।

कक्षा–4 : टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–4 : प्रथम टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• कहानी / कविता / परिवेशीय घटना से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सुनकर पूर्ण वाक्य में उत्तर दे सकें। • सुनी गयी कविता / कहानी का भाव अपने शब्दों में आत्मविश्वास के साथ कह सकें। • समूह चर्चा के दौरान तर्क के साथ अपने विचार रख सकें एवं दूसरे की बात को सुनने की क्षमता का विकास कर सकें। • विषयवस्तु से सम्बन्धित क्या, क्यों, कैसे वाले प्रश्न बना सकें एवं पूछने की क्षमता का विकास कर सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें। • प्रश्नों को समझकर उनके उत्तर सटीक वाक्य संरचना के साथ व्यक्त कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • विविध प्रकार की वस्तुओं को बनाने की विधि, निर्देशों एवं सांकेतिक भाषा को पढ़कर समझना एवं उपयोग कर सकें।
3.	**लिखना**	• विषय के अनुसार विचारों एवं अनुभवों को अपने शब्दों में लिख सकें। • संदर्भ के अनुसार क्या, क्यों, कौन, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में व्यवस्थित लिख सकें। • दृश्यात्मक चित्रों पर क्रमबद्धता के साथ कहानी का सृजन कर लिख सकें। • विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर सकें।
4.	**व्याकरण**	• विलोम शब्दों, मुहावरों की समझ के साथ वाक्यों में प्रयोग कर सकें। • शब्दों में प्रत्यय को पहचान सकें एवं स्वयं के स्तर पर प्रयोग कर सकें। • विराम चिह्नों को पहचान सकें एवं उपयुक्त जगह पर उपयुक्त चिह्न का प्रयोग कर सकें। • र के विभिन्न प्रयोगों को समझ सकें व लेखन में उपयुक्त प्रयोग कर सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से विविध सामग्री बना सकें। • कहानी के पात्रों का अभिनय कर सकें एवं संवाद बोल सकें। • विविध सामग्रियों / जानकारियों का संकलन कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–4 : द्वितीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• कहानी / कविता / परिवेशीय घटना से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सुनकर पूर्ण वाक्य में उत्तर दे सकें उनके भाव अपने शब्दों में आत्मविश्वास के साथ कह सकें। • समूह चर्चा के दौरान तर्क के साथ अपने विचार रख सकें एवं दूसरे की बात को सुनने की क्षमता का विकास कर सकें। • विषयवस्तु से सम्बन्धित प्रश्न बनाकर पूछने की क्षमता का विकास कर सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें। • प्रश्नों को समझकर उनके उत्तर सटीक वाक्य संरचना के साथ व्यक्त कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • विविध प्रकार की वस्तुओं को बनाने की विधि, निर्देशों एवं सांकेतिक भाषा को पढ़कर समझ सकें एवं उपयोग कर सकें।
3.	**लिखना**	• स्पष्टता के साथ विषय के अनुसार विचारों एवं अनुभवों को अपने शब्दों में लिख सकें। • प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में व्यवस्थित रूप से लिख सकें। • दृश्यात्मक चित्रों / विभिन्न विषयवस्तु से संबंधित कहानी का सृजन कर लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• विलोम शब्दों, मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कर सकें। • 'र' के विभिन्न रूपों का लेखन में उपयुक्त प्रयोग कर सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से विविध सामग्री बना सकें। • कहानी के पात्रों का अभिनय कर सकें एवं संवाद बोल सकें। • विविध सामग्रियों / जानकारियों का संकलन कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–4 : तृतीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• कविता, कहानी, परिवेशीय घटनाओं को अपनी भाषा में उचित उतार–चढ़ाव के साथ एकल रूप में सुना सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के जवाब आत्मविश्वास के साथ दे सकें। • चर्चा के दौरान अपनी बात को तर्क के साथ स्पष्ट शब्दों में रख सकें। • विविध प्रकार की जानकारियों को सुनने और जानने में / रुचि दिखा सकें।

2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें एवं परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहु–भाषिक और बहु–सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ सकें एवं नवीन जानकारी ले सकें।
3.	**लिखना**	• उचित शब्दावली का प्रयोग करते हुए सुन्दर व स्पष्ट शब्दों में स्वयं की आत्मकथा एवं यात्रा का वर्णन लिख सकें। • विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर सकें। • चित्र दृश्यों को देखकर क्रमबद्वता के साथ कहानी का सृजन कर सकें। • कल्पनात्मक प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिख सके।
4.	**व्याकरण**	• सर्वनाम शब्दों, वचन, लिंग एवं विलोम का उचित अनुप्रयोग कर सकें। • मुहावरों एवं प्रत्यय का इस्तेमाल समझ के साथ कर सके।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• चित्र बनाकर उचित रंग संयोजन कर सकें। • मिट्टी से खिलौने एवं विभिन्न वस्तुओं से कोलाज बना सकें। • अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्ति दे सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	**कक्षा–4 : चतुर्थ टर्म** **पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु**
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• विभिन्न विधाओं से संबंधित पश्नों के उत्तर मौखिक रूप से आत्मविश्वास के साथ दे सकें। • चर्चा के दौरान अपनी बात को तर्क के साथ स्पष्ट शब्दों में रख सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • विविध प्रकार की जानकारियों को सुनने और जानने में रुचि दिखा सकें। • कविता/गीतों को ताल व हावभाव के साथ सुना सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें एवं परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहु–भाषिक और बहु–सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ सकें एवं नवीन जानकारी ले सकें। • पढ़ी हुई सामग्री में से प्रश्न पूछ सकें।

3.	**लिखना**	• उचित शब्दावली का प्रयोग करते हुए सुन्दर व स्पष्ट शब्दों में अपनी बात को लिखकर व्यक्त कर सकें। • तुकबंदी और संवादों का लेखन कर सकें। • विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर सकें। • कल्पनात्मक प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• अनुस्वार, अनुनासिक, सर्वनाम शब्दों, वचन, लिंग एवं विलोम का उचित अनुप्रयोग कर सकें। • विशेषण, मुहावरों एवं प्रत्यय का इस्तेमाल समझ के साथ कर सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• चित्र बनाकर उचित रंग संयोजन कर सकें। • नाटक तैयार कर प्रस्तुत कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

कक्षा–4 : प्रथम टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–1 : क्यों ? (कविता)

- कविता को उचित भाव व उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना व गाना।
- नवीन शब्दों को ग्रहण करना एवं अपनी भाषा में उनका इस्तेमाल करना।
- विषय वस्तु को समझते हुए उस पर अपने विचार लिखना।
- परिवेशीय वस्तुओं के साथ सहसम्बन्ध जोड़ना।
- समूह चर्चा में अपनी बात को रखना व दूसरे की बात को सुनना।
- शब्दों के अलग–अलग अर्थ को समझना एवं उचित सन्दर्भ के अनुसार प्रयोग करना।
- संबंधित विषयवस्तु पर प्रश्न बनाना/पूछना।
- पहेलियाँ हल करना, अनुमान लगाना एवं खोजबीन करना।
- चित्र सामग्री इकट्ठा कर उसको कोलाज के रूप में सृजित करना।

पाठ– 2 पापा जब बच्चे थे (कहानी)

- कहानी को पढ़कर आनन्द लेना एवं स्वयं के अनुभवों से जोड़ना।
- तुकान्त शब्दों को समझना एवं खोजबीन करना।
- परिचित लोगों से बातचीत कर सूचना एकत्र करना एवं पढ़कर समझना एवं पढ़े हुए के भाव संक्षिप्त रूप में अपनी भाषा में समूह में सुनाना।
- संगीत के वाद्य यंत्रों को पहचानना एवं अपनी पसन्द के वाद्य यंत्रों के बारे में लिखना।
- विषय के अनुरूप उसके कारण को समझते हुए चर्चा में भाग लेना।
- विषयवस्तु का संक्षिप्तीकरण करना।
- पर्यावरणीय वस्तुओं के प्रति संवेदनशील होना।
- विभिन्न प्रकार के मुखौटे बनाना एवं मुखौटों के अनुसार अभिनय करना।

पाठ– 4 सूत का रेशम (कहानी)

- कहानी को धाराप्रवाह गति से पढ़ना एवं उसके भाव को समझकर प्रस्तुत करना।
- नए शब्दों को समझना एवं वाक्यों व संदर्भ के अनुरूप शब्दों का चयन करना।
- विषय वस्तु समझ कर प्रश्नों पर अपने विचार लिखना।
- प्रत्यय और उपसर्ग को समझना एवं नए

समूह में बताना।
- स्वयं प्रश्न बनाकर समाधान सोचना व खोजना।
- सम्बन्धों की समझ मज़बूत बनाना, सम्बन्धों के आधार पर लोगों को सम्बोधित कर सम्मान दे पाने की समझ बनाना।
- स्थान विशेष के कार्यों से अवगत होना, विभिन्न कामों से जुड़े व्यवसाय को समझना एवं उनके प्रति संवेदनशील होना।
- विशेषण एवं सर्वनाम की अवधारणा को समझना एवं प्रयोग करना।
- साक्षात्कार विधा से परिचित होना, साक्षात्कार हेतु प्रश्नों को बनाना एवं जानकारी एकत्र करनाा।

पहेलियाँ
- पढ़ने के प्रति रुचि बनाना।
- पढ़कर स्वयं समझते हुए उनके उत्तर खोजना एवं कक्षा में अन्य और पहेलियाँ पूछने की पहल करना।

पाठ– 3 कदम्ब का पेड़ (कविता)
- कविता को पढ़कर सुनाना एवं उसमें आनन्द लेना।
- नए शब्दों को समझना एवं शब्दकोष बढ़ाना।

शब्दों का निर्माण करना।
- मुहावरों को प्रारंभिक स्तर पर समझना एवं उनका वाक्य बनाने में प्रयोग करना।
- काल एवं क्रिया को समझना एवं संदर्भ के अनुसार प्रयोग करना।
- अपनी बात अभिनय के माध्यम से व्यक्त करना एवं आस–पास के लोगों का अभिनय करना।
- दी गई विधि को पढ़कर समझते हुए सामग्री का निर्माण करना।
- रचनात्मक लेखन– चित्र देखकर कहानी लिखना एवं कहानी के आधार पर चित्र बनाना।

बैंड, बाजा, बच्चे
- पढ़कर खेल को समझना।
- खेल के नियमों को पढ़कर समझते हुए खेल करवाना या स्वयं खेलने की उत्सुकता दिखाना।

कक्षा–4 : द्वितीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–5 : कुरज री विनती (लोककथा)
- पढ़कर आनन्द लेना और अपने परिवेश से सम्बन्धित लोककथाओं को जानने के प्रति उत्सुक होना।
- नए शब्दों से परिचित होना एवं शब्दों का इस्तेमाल अपनी भाषा में करना।
- परिवेशीय/क्षेत्रीय शब्दों को मानक भाषा में प्रयोग करते हुए समझना।
- विषय वस्तु समझ कर उसके संक्षिप्त रूप को प्रस्तुत करना, सन्दर्भ के अनुसार अनुमान लगाना एवं अपने विचारों को मूर्त रूप देना।
- प्रश्नों को समझ कर समस्या का समाधान ढूँढना।
- सन्दर्भ के आगे व पीछे की बात को समझना। (घटना को क्रमबद्धता देने की समझ विकसित करना।)
- परिवेशीय सजगता के साथ संवेदनशीलता के

चुटकुले
- चुटकुलों को पढ़ने में रुचि दिखाना एवं पढ़कर कक्षा में सुनाना।

पाठ– 7 बाँकी–बाँकी धूप (कविता)
- कविता का उचित हावभाव व उतार–चढ़ाव के साथ गायन करना व पढ़ना।
- तार्किक चिन्तन करते हुए वाद–विवाद में अपने विचार रखना।
- विषय–वस्तु के आधार पर कल्पना करते हुए वाक्य प्रयोग करना।
- विपरीतार्थक शब्दों को समझना एवं अपने लेखन/पठन में प्रयोग करना।
- ज्ञानन्द्रियों के कार्यों के आधार पर कामों को वर्गीकृत करना।
- स्वयं की कल्पना के अनुसार संवाद बोलना एवं दिए गए बिन्दु पर अपने विचार क्रमबद्ध रूप से

भाव को विकसित करना।

- मुहावरों ,विशेषण एवं वचन शब्दों को समझ के साथ प्रयोग करना।
- विराम चिह्नों की अवधारणा पर समझ बनाना
- एवं लिखने व पढ़ने में प्रयोग करना।
- स्थानीय लोक गीतों में पक्षियों वाले गीतों को खोजना एवं संबंधित पक्षी पर लिखे गीतों को गाना और संकलन करना।
- विधि को पढ़कर समझते हुए वाद्य यंत्र बनाना।
- स्थानीय वस्तुओं (कबाड़) से पसन्द के खिलौने बनाने की ओर अग्रसर होना।

पाठ– 6 हाथों से बातचीत (कहानी)

- पढ़कर समझते हुए लिखना।
- अपने अनुभवों को साझा करना।
- चिह्नों को समझ के साथ लेखन में प्रयोग करना।
- प्रत्यय शब्दों को समझना।
- विशेष सक्षम जनों एवं परिवेश से संबंधित अन्य लोगों के प्रति संवेदनशील होना।

अभिव्यक्त करना।

- सूचना इकट्ठा करना व प्रश्नावली का निर्माण करना।
- खोजबीन करना, विभिन्न प्रकार की चीज़ों को संग्रहित करना, जीव जन्तुओं के अभिनय करना, चित्र बनाकर उचित रंग संयोजन करना।

पाठ– 8 गोडावण (आत्मकथा)

- नई विधा को समझना।
- विभिन्न लोगों द्वारा लिखी आत्म कथा को पढ़ने के लिए प्रेरित होना।
- स्वयं आत्मकथा लिखने का प्रयास करना।
- पढ़कर समझते हुए अपनी बात को व्यक्त करना।
- 'र' के विभिन्न रूप व ध्वनि को समझ कर उसके विभिन्न रूपों का अपने लेखन व पठन में सहजता के साथ प्रयोग करना।
- खोजबीन करना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति करना एवं चीज़ों को संग्रहित करना।

लोकनृत्य

- अपने परिवेश के विभिन्न लोकनृत्यों के प्रति संवेदनशील होना एवं उनसे संबंधित चर्चा में अपनी बात को स्पष्टताके साथ रखना।

कक्षा–4 : तृतीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–9 आया वसंत (कविता)

- विभिन्न ऋतुओं के बारे में पढ़कर समझ बनाना ।
- कविता को उचित भाव के साथ पढ़ना व उसके भाव को समझकर व्यक्त करना।
- विषय वस्तु के आधार पर अपनी कल्पना की अभिव्यक्ति करना।
- सूचीकरण करते हुए निर्देशानुसार वर्गीकरण करना।
- आधे वर्ण की अवधारणा को समझते हुए प्रयोग करना।
- योजक शब्दों को समझना।
- सर्वनाम शब्दों का लेखन–पठन में प्रयोग करना।
- परिवेशीय शब्दों को मानक व अंग्रेजी भाषा में

पाठ–12 केसर की क्यारी (कहानी)

- कहानी को उचित प्रवाह के साथ पढ़ना।
- विषयवस्तु से संबंधित प्रश्नों के तर्कपूर्ण उत्तर लिखना व बताना।
- विषय–वस्तु का भाव समझते हुए अपने विचार लिखकर व बोलकर बताना।
- विशेषण शब्दों का समझ के साथ प्रयोग करना।
- परिवेश में पाए जाने वाले विभिन्न जीव जन्तुओं के रहने के स्थान आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना एवं उनके प्रति संवेदनशील होना।
- विषय वस्तु के आधार पर युद्ध के दौरान आमजन पर आने वाली चुनौतियों को समझना।
- कहानी का संक्षिप्तीकरण करना।
- 'स्वर–व्यंजन' में अन्तर करना।

सहजता के साथ सह संबध बनाना।

- खोजबीन कर संकलन करने की आदत का विकास करना।

बंजारा नमक लाया

- पढ़ने के प्रति उत्सुकता दिखाना।
- पढ़कर गीत के रूप में सुनाना।

पाठ– 10 बेणेश्वर धाम (यात्रा वृतांत)

- नवीन विधा से परिचित होना एवं पढ़कर समझना।
- नवीन शब्दों से परिचित होना एवं शब्दभंडार को बढ़ाना।
- विषयवस्तु के अनुसार अपनी बात को समूह में रखना।लिंग की अवधारणा को समझना और सन्दर्भ के आधार पर प्रयोग करना।
- कोलाज़ की अवधारणा को समझते हुए सृजन करना।
- क्षेत्रीय भाषा को मानक भाषा में प्रयोग करते हुए संस्कृति के प्रति संवेदनशील बनना।
- यात्रा वृतान्त को पढ़ने के लिए प्रेरित होना और स्वयं लिखने का प्रयास करना।

पाठ– 11 पढ़क्कू की सूझ (कविता)

- उचित गति व भाव के साथ समझते हुए कविता को पढ़ना व उसमें कही जा रही बात को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
- सीखे गए (विषय–वस्तु) नए शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में करना।
- विषयवस्तु का पुनः अवलोकन करते हुए प्रश्नों के तर्कपूर्ण उत्तर लिखना व बताना।
- उपसर्ग की प्रारंभिक समझ बनाना एवं स्वयं शब्द निर्मित करना।
- विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को समझना तथा व्यवसायों के प्रति संवेदनशील होना।
- समस्या का वास्तविक हल ढूँढने का प्रयास करना।
- खोज बीन (टास्क के अनुसार) करना।
- मिट्टी से विभिन्न खिलौने बनाना।

चित्रकथा

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़ी हुई बात को अपने शब्दों में सुनाना एवं दूसरों को पढ़कर सुनाने की पहल करना।
- 'र' के विभिन्न स्थानों पर हुए प्रयोग को समझना।

शिवांक की डायरी

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- स्वयं भी डायरी लेखन के लिए प्रेरित होना।

पाठ–13 थप्प रोटी थप्प दाल (संवाद)

- संवाद को पढ़कर समझना एवं संवाद बोलने व लिखने के कौशल को जानना।
- नवीन शब्दों की जानकारी होना एवं उन्हें प्रयोग में लाना।
- प्रश्नों को समझ कर विषयवस्तु से ढूँढ कर लिखना।
- प्रश्नों (open questions) के उत्तर स्वयं समझ कर विस्तार से लिखना।काम के आधार पर लिंग भेद को समझना।
- विषय वस्तु के आधार पर आवश्यक सामग्री की पहचान व खोजबीन करना।
- तर्क के आधार पर अपनी बात समूह के समक्ष अभिव्यक्त करना।
- कल्पना करके विभिन्न प्रकार के संवाद बोलना व लिखना।
- विभिन्न पात्रों का अभिनय करना।
- विपरीतार्थक शब्दों पर समझना एवं उनका सही इस्तेमाल करना।

पाठ–14 खेजड़ी (कविता)

- नवीन शब्दों की जानकारी होना एवं उन्हें प्रयोग में लाना।
- मानक भाषा एवं परिवेशीय बोली के मध्य सहसंबंध बनाना।
- विषयवस्तु की समझ के आधार पर उपयुक्त शब्दों का चुनाव करना।
- अनुनासिक बिन्दु को पहचानकर उसका प्रयोग करना।
- संज्ञा और प्रत्यय पर समझ बनाना।

मोरियो आछौ बोल्यौ रे

- लोकगीतों के प्रति रुझान बनाना।
- पढ़ने और गाने में आनन्द लेना।
- अन्य लोकगीतों को संग्रहित कर सुनाना।

ये बात समझ में नहीं आई

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़कर गीत के रूप में गाना।
- कक्षा या अन्य सामारोह में सुनाने की पहल करना।

कक्षा–4 : चतुर्थ टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–12 केसर की क्यारी (कहानी)

- कहानी को उचित प्रवाह के साथ पढ़ना।
- विषयवस्तु से संबंधित प्रश्नों के तर्कपूर्ण उत्तर लिखना व बताना।
- विषय–वस्तु का भाव समझते हुए अपने विचार लिखकर व बोलकर बताना।
- विशेषण शब्दों का समझ के साथ प्रयोग करना।
- परिवेश में पाए जाने वाले विभिन्न जीव जन्तुओं के रहने के स्थान आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना एवं उनके प्रति संवेदनशील होना।
- विषय वस्तु के आधार पर युद्ध के दौरान आमजन पर आने वाली चुनौतियों को समझना।
- कहानी का संक्षिप्तीकरण करना।
- 'स्वर–व्यंजन' में अन्तर करना।
- 'र' के विभिन्न स्थानों पर हुए प्रयोग को समझना।

शिवांक की डायरी

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- स्वयं भी डायरी लेखन के लिए प्रेरित होना।

पाठ–13 थप्प रोटी थप्प दाल (संवाद)

- संवाद को पढ़कर समझना एवं संवाद बोलने व लिखने के कौशल को जानना।
- नवीन शब्दों की जानकारी होना एवं उन्हें प्रयोग में लाना।
- प्रश्नों को समझ कर विषयवस्तु से ढूँढ कर लिखना।
- प्रश्नों (open questions) के उत्तर स्वयं समझ कर विस्तार से लिखना।काम के आधार पर लिंग भेद को समझना।
- विषय वस्तु के आधार पर आवश्यक सामग्री की पहचान व खोजबीन करना।
- तर्क के आधार पर अपनी बात समूह के समक्ष अभिव्यक्त करना।

  कल्पना करके विभिन्न प्रकार के संवाद बोलना व लिखना।
- विभिन्न पात्रों का अभिनय करना।
- विपरीतार्थक शब्दों पर समझना एवं उनका सही इस्तेमाल करना।

पाठ–14 खेजड़ी (कविता)

- नवीन शब्दों की जानकारी होना एवं उन्हें प्रयोग में लाना।
- मानक भाषा एवं परिवेशीय बोली के मध्य सहसंबंध बनाना।
- विषयवस्तु की समझ के आधार पर उपयुक्त शब्दों का चुनाव करना।
- अनुनासिक बिन्दु को पहचानकर उसका प्रयोग करना।
- संज्ञा और प्रत्यय पर समझ बनाना।

मोरियो आछौ बोल्यौ रे

- लोकगीतों के प्रति रुझान बनाना।
- पढ़ने और गाने में आनन्द लेना।
- अन्य लोकगीतों को संग्रहित कर सुनाना।

ये बात समझ में नहीं आई

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़कर गीत के रूप में गाना।
- कक्षा या अन्य सामारोह में सुनाने की पहल करना।

कक्षा–5 : टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–5 : प्रथम टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• कविता / बालगीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर स्पष्टता से सुना सकें। • पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दे सकें। • चर्चा में अपने अनुभव सुना सकें और दूसरों के अनुभवों को सुन सकें। • नवीन जानकारियों को सुनकर समझकर अपने अनुभव जोड़ते हुए विचार दे सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• कविता, कहानी, चित्र कहानी, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धराप्रवाहिता के साथ पढ़ सकें। • पाठ्य सामग्री के मूल भाव एवं विचार को समझ सकें। • नवीन शब्दों को संदर्भ के साथ समझने के लिए शब्दकोश का उपयोग कर सकें। • साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित संदर्भ पुस्तकों को पढ़ने की उत्सुकता दिखा सकें।
3.	**लिखना**	• पाठ्य सामग्री को पढ़ कर उसके अर्थ एवं मूल भाव को उचित विराम चिह्नों के प्रयोग के साथ लिख सकें। • चित्र को देख कर क्रमबद्धता के साथ लगभग 9–10 वाक्यों में विचार को लिख सकें। • पढ़ी / सुनी लोककथा को स्वयं के स्तर पर लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• कारक चिह्नों की प्रारंभिक समझ के साथ उपयोग कर सकें। • अनुनासिक एवं अनुस्वार के उच्चारण भेद को समझ सकें। • विशेषण, उपसर्ग को समझ सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• अभिनय कर सकें अपने पाठों के पात्रों के अनुसार। • गीत / कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र / आकलन सूचक	कक्षा–5 : द्वितीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य / विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• कहानी / कविता / गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर बता सकें। • पाठ्य सामग्री से सम्बन्धित प्रश्न पूछ सकें एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में दे सकें। • कक्षा–कक्ष में हो रही चर्चा में अपने अनुभव के आधार पर विचार रख सकें। • गीत / कविता का लय व आनन्द के साथ गायन कर सकें। • नवीन जानकारियों को सुनकर समझकर अनुभव से जोड़ते हुए अपने विचार दे सकें।

2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• चित्र, कविता, कहानी, अनुच्छेद, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धारा प्रवाह गति से पढ़ सकें। • पाठ्य सामग्री के मूलभाव को समझ सकें। • साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन कर सकें। • खोजपूर्ण जानकारी एवं अनुमान, कल्पना आधारित प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें। • पाठ्य सामग्री को पढ़कर उसपर प्रतिक्रिया दे सकें।
3.	**लिखना**	• प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिख सकें एवं तर्क प्रस्तुत कर सकें। • विविध प्रकार की विषयवस्तु के संदर्भ में विस्तार से लेखन कर सकें। • लेखन में सुन्दरता एवं शुद्धता का ध्यान रख सकें।
4.	**व्याकरण**	• संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, मुहावरों आदि का समझ के साथ प्रयोग कर सकें। • अनेकार्थी शब्दों को समझते हुए उचित प्रयोग कर पाना।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• अभिनय कर सकें अपने पाठों के पात्रों के अनुसार। • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–5 : तृतीय टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• कहानी/कविता/गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर हाव–भाव सहित स्पष्टता के साथ सुना सकें। • चर्चा में अपनी बात को तर्क के साथ रख सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • नवीन जानकारियों को सुनने के प्रति उत्साहित हो सकें। • संवादों को सुनकर उनके प्रमुख तत्व को समझ सकें। • प्रश्नों को सुनकर समझते हुए उत्तर दे सकें और प्रश्न पूछ सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• पाठ्य सामग्री के मूलभाव को पढ़कर समझ सकें। • उचित गति एवं उच्चारण की शुद्धता के साथ पढ़ सकें और पढ़ी सामग्री के बारे में बात कर सकें। • साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों को पढ़ने के प्रति रुझान बना सकें। • संबंधित सूचनाओं, निर्देशों एवं पत्रों को पढ़कर समझते हुए कार्य कर सकें। • बढ़ते क्रम में शब्दावली का संदर्भ के साथ अर्थ ग्रहण कर सकें व नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर सकें।
3.	**लिखना**	• प्रश्नों के उत्तर विस्तार व तर्क के साथ लिख सकें। • पठित सामग्री के भाव को स्वयं समझ कर लिख सकें। • पत्र के प्रारूप को समझकर स्वयं पत्र लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• क्रिया और क्रिया विशेषण की पहचान करते हुए प्रयोग कर सकें।

		• कारक चिह्नों को समझ के साथ पठन–लेखन में उपयोग कर सकें। • पर्यायवाची एवं विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर पाना। • संज्ञा, विशेषण, लिंग,एवं वचन का इस्तेमाल समझ के साथ कर सकें।
5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• अपने अनुभवों को चित्र द्वारा व्यक्त कर सकें। (ऐसे चित्र जिनमें एक से अधिक चीज़ें हो रही हों।) • अभिनय कर सकें अपने पाठों के पात्रों के अनुसार। • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र/ आकलन सूचक	कक्षा–5 : चतुर्थ टर्म पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
1.	**सुनकर समझना और समझकर बोलना**	• अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं/अपने अनुभव एवं अपनी भावनाओं को 8–10 वाक्यों में उचित प्रवाह एवं नवीन शब्दावली के प्रयोग के साथ वर्णन करते हुए व्यक्त कर सकें। • नवीन जानकारियों को सुनकर समझकर अनुभव से जोड़ते हुए अपने विचार दे सकें। • विषयवस्तु से संबंधित तर्क संगत प्रश्न पूछ सकें एवं सुनकर क्यों व कैसे वाले प्रश्नों के तर्कसंगत उत्तर पूरे वाक्य में दे सकें। • कहानी/कविता/गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर हाव–भाव सहित स्पष्टता के साथ सुना सकें।
2.	**पढ़ना और पढ़कर समझना**	• चित्र, कविता, कहानी, अनुच्छेद, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धारा प्रवाह गति से पढ़ सकें। • पाठ्य सामग्री के मूल भाव एवं विचार को समझ कर अभिव्यक्त कर सकें। • विभिन्न प्रकार की शब्दावली का संदर्भ के साथ अर्थ ग्रहण कर सकें व नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर सकें। • पठन हेतु दी गई सामग्री को उचित गति व शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सकें एवं पठित सामग्री को समझते हुए अपनी राय बता सकें।
3.	**लिखना**	• पहेलियों, लोकोक्तियों, लोककथाओं को खोजकर लिख सकें। • पढ़े गए संवाद को कहानी के रूप में स्वयं के स्तर पर लिख सकें। • पाठ्य सामग्री को पढ़ कर उसके अर्थ एवं मूल भाव को उचित विराम चिह्नों के प्रयोग के साथ लिख सकें।
4.	**व्याकरण**	• क्रिया और क्रिया विशेषण की पहचान कर सकें एवं प्रयोग कर सकें। • लोकोक्तियों को समझ सकें एवं पर्यायवाची ,विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर सकें। • समानार्थी शब्दों को समझ सकें एवं अपनी भाषा में प्रयोग भी कर सकें।

5	**सृजनात्मक अभिव्यक्ति**	• अपने अनुभवों को चित्र द्वारा व्यक्त कर सकें। (ऐसे चित्र जिनमें एक से अधिक चीज़ें हो रही हों।) • अभिनय कर सकें अपने पाठों के पात्रों के अनुसार। • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
6	**परिवेशीय सजगता**	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

कक्षा–5 : प्रथम टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ– 1 चाक चले चाक (कविता)

- कविता को पढ़कर समझना एवं समझ के अनुसार उसके भाव को व्यक्त करना।
- अपने मन में उठने वाले विचारों को समूह में अभिव्यक्ति करना ।
- पठित कविता के आधार पर अनुभव को शामिल करते हुए अपने विचार व्यक्त करना
- अनुनासिक एवं अनुस्वार युक्त शब्दों में अन्तर करना।
- पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक, विस्मयाधिबोधक चिह्नों के प्रयोग को समझकर अनुप्रयोग करना।
- लोक गीतों को गाकर कक्षा में एकल या समूह में प्रस्तुत करना।
- विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों को खोजना एवं उनका संकलन करना।

पाठ– 2 उवुंगलमा (कहानी)

- कहानी को धाराप्रवाह गति के साथ पढ़कर समझना।
- अनुमान व कल्पना के आधार पर अपने विचारों को तर्क के साथ व्यक्त करना।
- कहानी से अपने अनुभव को जोड़कर बताना।
- दी गई विषयवस्तु के अनुसार स्वयं कहानी लिखना ।
- मुहावरों, उपसर्ग को समझना एवं आवश्यकतानुसार उनका सही प्रयोग करना।
- मुखौटों के माध्यम से अभिनय करना।
- चित्रों के माध्यम से वाक्यों का क्रमवार सृजन करना।

पहेलियाँ

- पढ़ने के प्रति रुचि होना।
- पढ़कर पहेलियों को हल करना।
- कक्षा कक्ष में पहेलियों को पूछने या जबाव देने की पहल करना।

पाठ– 3 खाओ,कपड़ो,खाओ (लोककथा)

- लोककथा को पढ़कर समझना, स्वयं के परिवेश से संबंधित लोककथा कक्षा में सुनाना।
- पाठ में आए नए शब्दों का अर्थ समझते हुए स्वयं की भाषा में प्रयोग करना।
- युग्म शब्दों की समझ बनाना।
- अपनी बोली के शब्दों को मानक रूप में लिखना।
- विषयवस्तु, अपने अनुभव तथा परिवेश से जुडे प्रश्नों के जवाब देना।
- समूह में चर्चा करना एवं विषयों पर अपनी राय को व्यवस्थित ढंग से समूह में प्रस्तुत करना।
- कारक की समझ बनाना।
- 'र' के विभिन्न रूपों को समझ के साथ प्रयोग करना।
- पुस्तकालय से संदर्भानुसार पुस्तक पढ़कर समझना।
- लोककथा का अभिनय करना।

पाठ– 4 किताबें (कविता)

- कविता को पढ़कर आनन्द लेना और उचित भाव के साथ गाना।
- अपने आसपास, दोस्तों आदि से चर्चा कर पुस्तकों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- पढ़ी गई विषयवस्तु के आधार पर प्रश्नों के जवाब लिखना ।
- विशेषताओं के आधार पर ध्वनियों को लिखना।
- विशेषण की समझ एवं उचित प्रयोग करना।

कक्षा–5 : द्वितीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ– 5 गवरी का खेल (लोकनाट्य)

- पाठ्यवस्तु को धाराप्रवाह गति से पढ़ते हुए समझाना एवं उसमें निहित भाव को व्यक्त करना।
- मानक भाषा के साथ सहसंबंध बनाते हुए अपनी बोली के शब्द का रूप लिखना।
- विविध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखना।
- 'गवरी' के समान परिवेश में खेले जाने वाले खेलों पर समूह में चर्चा करना।
- अपनी मन की बात समूह अथवा व्यक्तिगत रूप में बताना।
- अनेकार्थी शब्दों के बारे में समझ बनाना।
- पर्यायवाची शब्दों को समझकर उचित प्रयोग करना।
- चित्रों के आधार पर वाक्य लिखना व परिस्थितियाँ बताना।

गोरबंद

- पढ़ने के प्रति रुचि होना एवं परिवेशीय लोकगीतों को जानने या बताने की पहल करना।

गीत को गाकर विभिन्न सामारोहों में सुनाना।

पाठ– 6 सूरज का गोला (कविता)

- कविता को धाराप्रवाह गति से पढ़ते हुए समझना एवं हावभाव के साथ गाकर सुनाना।
- कविता के मूल भाव को समझना एवं समूह में व्यक्त करना।
- नए शब्दों के अर्थ को समझकर संदर्भ के अनुसार इस्तेमाल करना।
- विषयवस्तु एवं कल्पना आधारित प्रश्नों के जवाब देना।
- विभिन्न सम्बन्धित व्यक्तियों के प्रति अपने भावों को अभिव्यक्त करना उनके प्रति संवेदनशील होना।
- अवलोकन के आधार पर होने वाले परिवर्तनों को लिपिबद्ध करना। संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों को समझना एवं उनका अनुप्रयोग करना।
- संदर्भानुसार पुस्तकें पढ़ने की उत्सुकता दिखाना।
- पुस्तकालय अथवा अन्य पढ़ी हुई कहानियों को कक्षा में सुनाना।

भाषा में पहेलियाँ पहेलियों की भाषा

- पहेलियों को पढ़कर समझना।
- पहेलियों को कक्षा में पूछना व उनके जवाब दे पाने की पहल करना।

पाठ– 7 गुब्बारे पर चीता (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना।
- कहानियों को पढ़ने के प्रति उत्साह एवं पहल दिखाना।
- नए शब्द समझना एवं उनका अपने लेखन में प्रयोग करना।
- विषयवस्तु को समझकर प्रश्नों के उत्तर देना।
- कल्पना/अनुमान के आधार पर प्रश्नों के जवाब देना ।
- विभिन्न मुहावरों का अर्थ समझकर संदर्भ के अनुसार इस्तेमाल करना।
- समूह में चर्चा कर अपने विचारों को अभिव्यक्त करना एवं कहानी से सम्बन्धित बातों का सार लिखना।

पाठ– 8 हॉकी का जादूगर (वर्णन)

- पढ़कर समझना एवं खेलों के प्रति रुचि व उत्साह दिखाना।
- नए शब्दों का अर्थ समझना एवं अपने लेखन में संदर्भ के अनुसार उपयोग करना।
- पाठ पढ़कर बनी समझ के आधार पर विविध प्रश्नों के उत्तर देना।
- तर्क एवं अनुमान के आधार पर अपने विचार प्रश्नों के अनुरूप देना।
- पर्यायवाची शब्द, उपसर्ग आदि को समझना।
- खेलों के बारे में जानकारी एकत्रित करना एवं उस जानकारी को आपस में बाँटना।

कक्षा–5 : तृतीय टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ–9 संवारें रूप भारत का (कविता)

- कविता को भाव,उचित उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना एवं कक्षा में लय के साथ गाना।
- नए शब्दों को समझने के प्रति उत्सुक होना। अपने लेखन में सीखे गए शब्दों का प्रयोग करना।
- कविता से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर स्वयं समझ कर लिखना।
- अपने अनुभव के आधार पर कविता के भावों को समझते हुए उत्तर देना।
- दूसरों को अपने कार्य को दिखा पाने की पहल करना।
- लिंग, पर्यायवाची एवं क्रिया को समझ के साथ प्रयोग में लाना।
- कविताओं को पढ़ने के प्रति रुचि दिखाना, अन्य पढ़ी कविताओं को कक्षा–कक्ष में सुनाने की पहल करना।
- क्रियात्मक चित्र दृश्य में घटित हो रही घटनाओं के आधार पर वाक्य सृजित कर स्वयं लिखना।
- चित्र के आधार पर स्वयं कहानी का सृजन करना।

चुटकुले

- पढ़ने की ललक होना एवं पढ़कर आनन्द लेना।
- पढ़े हुए को कक्षा में सुनाने की पहल करना।

पाठ –10 नानक भील (जानकारी)

- पढ़कर घटनाक्रम एवं हालातों को समझना और अपने परिवेश की स्थितियों के साथ तुलना करना।
- नए शब्दों के अर्थ समझना और अपने लेखन में उनका प्रयोग करना।
- संदर्भ आधारित प्रश्नो के उत्तर देना एवं पूछे गए प्रश्नों के जवाब अपनी राय से देना।
- क्रिया विशेषण शब्दों को समझना एवं लेखन में उचित प्रयोग करना।
- चित्र के आधार पर स्वयं वाक्य सृजित कर लिखना।
- पत्र की लेखनी व प्रारूप को समझ कर स्वयं पत्र लिख पाने का प्रयास करना।

पाठ–11 एक दिन की बादशाहत (कहानी)

- कहानी को पढ़कर समझना एवं वर्तमान परिस्थितियों के साथ तुलना करना।
- नए शब्दों को समझना एवं अपने लेखन में इनका प्रयोग करना।
- विषयवस्तु को समझकर प्रश्नों के उत्तर लिखना।
- अपने विचार, अनुभवों को तर्कशील चिंतन के साथ अभिव्यक्त करना।
- अपने अधिकारों के बारे में जानना एवं अपनी राय व्यक्त करना।
- 'बादशाहत' का अर्थ समझते हुए नई कहानी निर्माण करना तथा नया शीर्षक देना।
- व्यंजनों , अपनी पसंद– नापसंद के बारे में अपनी राय व्यक्त करना।
- विशेषण शब्दों को समझना, शब्दों का रूप परिवर्तन कर नए शब्द बनाना।
- अपने अनुभव, तर्क आदि के आधार पर अपनी राय/बात लिखना।

कक्षा–5 : चतुर्थ टर्म

पाठवार अधिगम कार्य/उद्देश्य

पाठ– 12 चेतक (कविता)

- कविता को भाव के साथ धाराप्रवाह गति से पढ़ना एवं उसके भाव को समझना।
- नये शब्दों के अर्थ समझकर उपयोग करना।
- पढ़ी गई कविता के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना।
- पर्यायवाची शब्द, क्रिया शब्दों की समझ बनाना एवं उनका उचित इस्तेमाल करना।
- किसी विषयवस्तु के बारे में स्वयं के स्तर पर वाक्य सृजित कर अनुच्छेद लिखना।
- कविता को याद कर विभिन्न अवसरों पर हावभाव के साथ सुनाना।
- पत्र को पढकर समझना एवं स्वयं भी पत्र लिखने का प्रयास कर पाने की पहल करना।

पाठ– 13 बुद्धिमान किसान (नाटक)

- नाटक विधा से परिचित होना एवं संवादों को उचित उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना व बोलना।
- नए शब्दों का अर्थग्रहण कर संदर्भ से समझना एवं उनका प्रयोग करना।
- पाठ से संदर्भित प्रश्नों के उत्तर खोजकर स्वयं लिखना एवं संदर्भित अन्य प्रश्नों के उत्तर तर्क सहित लिखना।
- युग्म शब्दों एवं समानार्थी शब्दों को समझना।
- क्रिया विशेषण शब्दों को समझना एवं स्वयं क्रिया–विशेषण युक्त वाक्य बनाना।
- पाठ के संवादों को कहानी के रूप में लिखना।
- चित्र देखकर स्वयं सृजन कर वाक्य लिखना।

चित्रकथा

- लघुचित्र कथा को पढ़कर समझना। कक्षा में सुनाना।

पाठ– 14 गर्मकोट (आत्मकथा)

- साहित्य की नई विधा से परिचित होना एवं पढ़कर समझना।
- नए शब्दों का अर्थग्रहण कर संदर्भ से समझना एवं उनका प्रयोग करना।
- पाठ को पढ़कर बनी समझ के आधार पर विविध प्रश्नों के जवाब कारण सहित देना।
- पात्रों के विषय में जानकारी एकत्र कर लिखना एवं समूह में बताना।
- कक्षा में चल रही चर्चा के दौरान स्वयं की पसन्द के बारे में बताना।
- अपने परिवेश के बारे में जानकारी प्राप्त करना एवं लिखकर अभिव्यक्त करना।
- लोकोक्तियों को समझना एवं अपने आसपास के लोगों के साथ उन्हें बाँटना।
- चित्र देखकर स्वयं वाक्य सृजन कर लिखना।

पाठ– 15 सोना

- पढ़कर समझना एवं उसी प्रकार की अन्य कहानियों को पढ़ने के प्रति उत्सुक होना।
- पाठ की समझ के आधार पर विकल्पित जवाब देना एवं प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखना।
- मुहावरों के अर्थ की समझ के आधार पर कक्षा–कक्ष में चर्चा करना।
- अपने परिवेशीय अवलोकन एवं कल्पना आदि के आधार पर जवाब देना एवं समूह में चर्चा करना।
- विभिन्न जन्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता दिखाना।
- विशेषण, संज्ञा एवं कारकों की समझ के साथ उचित प्रयोग करना।
- किसी व्यक्ति विशेष के बारे में 8–10 वाक्य लिखना